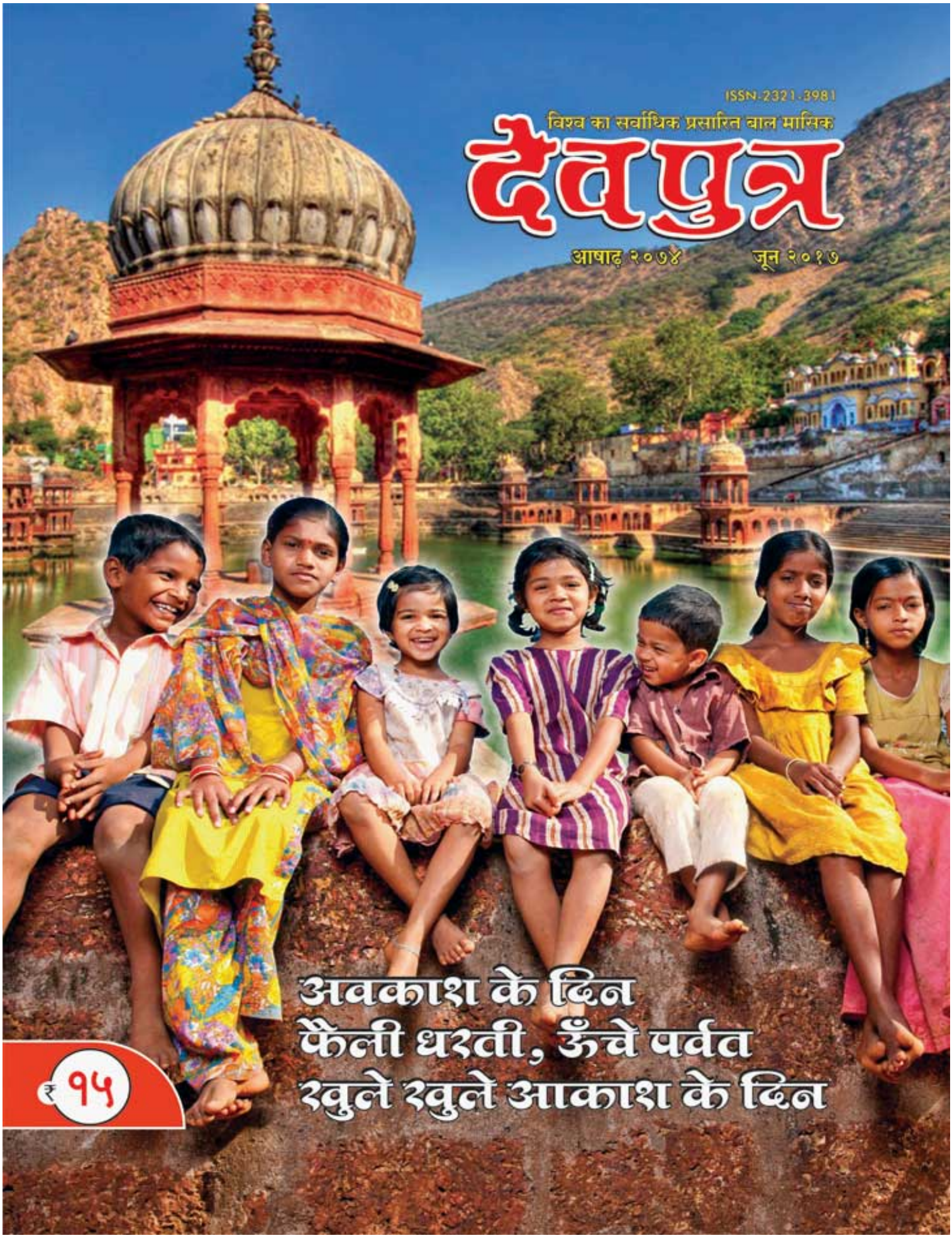
ISSN-2321-3981
विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
आषाढ़ २०७४ जून २०१७
अवकाश के दिन
फैली धरती, ऊँचे पर्वत
खुले खुले आकाश के दिन
₹ १५

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

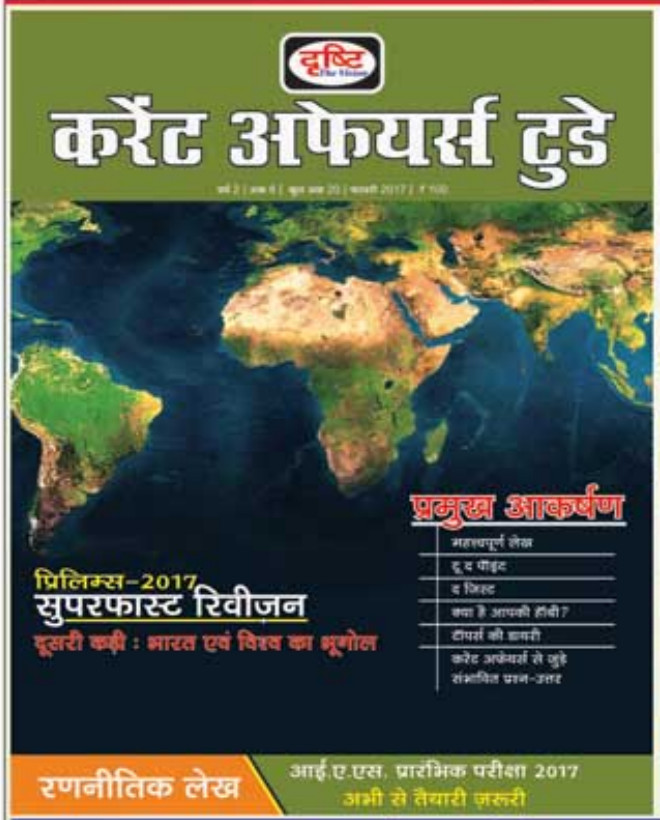

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

आषाढ़ २०७४ ▪ वर्ष ३७
जून २०१७ ▪ अंक १२

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

भारतीय फिल्म जगत की एक महान हस्ती हैं अक्षय कुमार। अभी अभी उन्हें भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का सम्मान देकर पुरस्कृत किया गया है। वे अपने सकारात्मक सोच के लिए प्रसिद्ध हैं। सोशल मीड़िया पर चर्चा करते हुए उन्होंने युवाओं से कहा कि 'असफलताओं से घबराने और निराश होने की जरूरत नहीं है। जैसे हर ताले की चाबी होती है, वैसे ही हर समस्या का हल है। दुनिया छोड़कर भागना या आत्महत्या किसी समस्या का हल नहीं है।' एक प्रश्न का सटीक उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि- 'क्या जान मार्कशीट से सस्ती है और क्यों ऐसा करने वाले कभी अपने माँ-बाप के बारे में नहीं सोचते?' उन्होंने कहा कि- 'यदि स्ट्रेस या डिप्रेशन है तो डाक्टर की सलाह लेना चाहिए। बातचीत करने से मसले सुलझते हैं।' और अंत में बहुत बेबाक शब्दों में कहा कि 'जान ही देनी है तो सरहद पर चले जाओ।'

मैं फिल्मों का शौकीन नहीं हूं। अक्षय कुमार का कोई रोल कहीं देखा हो, या प्रत्यक्ष उनसे कहीं भेंट हुई हो ऐसा अवसर भी मुझे याद नहीं। उनको चेहरे या फोटो से भी नहीं पहचानता। परन्तु यौवन की देहरी पर खड़े हुए लोगों के लिए उनकी यह सलाह मुझे बेहद पसंद आई। बेशकीमती जीवन में इतनी जल्दी हार मान लेना और उसको ही दांव पर लगा देना कहाँ की बुद्धिमानी है। प्रताप और शिवा ने कठिनाइयों में से ही मार्ग ढूंढा था। दुर्गावती और लक्ष्मीबाई चुनौतियों का सामना करते हुए ही आगे बढ़ी थीं। इतिहास आज उन्हें याद करता है तो केवल इसलिए कि उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी, निराश नहीं हुए।

बच्चो ! हम न जाने कितनी आंखों के तारे हैं, न जाने कितनों के सपने हैं, अनेक गौरवशाली क्षण हमारी प्रतीक्षा में हैं अतः अदम्य उत्साह और होंसले से हुंकार भरते हुए कहो- 'हम हार नहीं मानेंगे, हम रुकेंगे नहीं, निराशा को न तो मार्ग की बाधा बनने देंगे और न स्वर्णिम भविष्य की।'

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

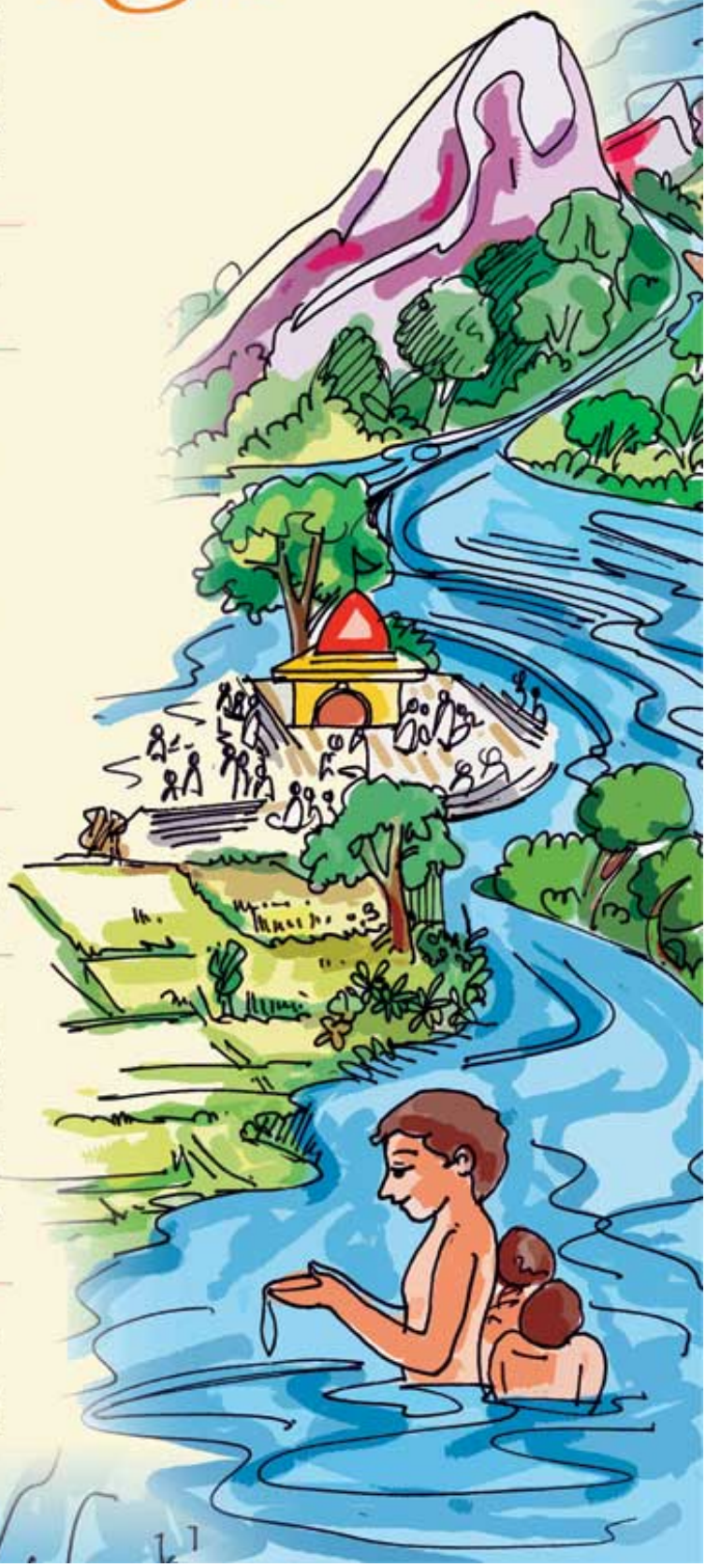

कहानी

- जंगल ट्रेन - सूर्यलता ०५
- चिड़िया का संसार - डॉ. रमेश पत्री १६
- पिकनिक - डॉ. शशि गोयल २२
- उतर गया बुखार - डॉ. राजीव गुप्ता २६
- पहाड़ों की सैर - सुधा विजय ३०
- आम का पेड़ - बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान' ३४
- मिली प्रेरणा - डॉ. जितेश कुमार ३८

आलेख

- ई-मेल - डॉ. बानो सरताज २०

कविता

- इस धरती को स्वर्ग... -अनंत प्रसाद 'रामभरोसे' ०६
- मिल कर योग करें - विजय कुमार ०७
- नाच चिरैया - कृष्ण 'शलभ' १८
- पेड़ - डॉ. प्रभा पंत २९
- पेड़ जीवन की आस - माणक तुलसीराम गौड़ ३२
- पेड़ पेड़ तुम जिन्दाबाद - डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' ३३
- गंगा - गोविन्द भारद्वाज ३६
- गंगाराम - भगवती प्रसाद द्विवेदी ४०
- चुस्की वाला - रेखा लोढ़ा 'स्मित' ४१

चित्रकथा

- फंस गए - देवांशु वत्स २८
- गर्मी से राहत - देवांशु वत्स ४३

स्तम्भ

- आपकी पाती - ११
- कॅरियर - प्रो. जमनालाल बायती १२
- गाथा वीर शिवाजी की - १४
- संस्कृति प्रश्नमाला - १८
- हमारे राज्यपुष्प - डॉ. परशुराम शुक्ल २५
- पुस्तक परिचय - ४४

बाल प्रस्तुति

- वीर बालिका - अरुण मेवाड़ा १०
- प्रकृति की सुन्दरता - सायली पिंगले २९
- जल - प्रशांत गुप्ता ३५

जंगल ट्रेन

कहानी : सूर्यलता

धीरे-धीरे कानन वन की लंबाई- चौड़ाई बहुत ज्यादा हो गई थी। चीता, हिरण और खरगोश जैसे फुर्तीले जानवर तो एक जगह से दूसरी जगह आसानी से पहुंच जाते थे। लेकिन कछुआ, केकड़ा, मुर्गा जैसे छोटे और गेंडा, भालू जैसे मोटे जानवरों को बहुत परेशानी होती थी।

पिंटू लंगूर इंजीनीयरिंग की पढ़ाई करके लौटा था। उसने महाराज शेर सिंह से जंगल में रेलगाड़ी चलवाने के लिए कहा। रेलगाड़ी चलवाने में बहुत खर्चा होना था। इसलिए महाराज शेरसिंह ने अपने दरबारियों से राय मांगी। आधे दरबारी रेल के पक्ष में थे लेकिन आधे विरोध में। इसलिए महाराज शेरसिंह कोई फैसला नहीं ले पा रहे थे। कभी उन्हें लगता कि रेलगाड़ी से काफी फायदे हैं तो कभी लगता कि नुकसान ज्यादा है।

दरबार में बहस चल ही रही थी कि युवराज शावक सिंह ने वहां प्रवेश किया। वह अपने आसन पर बैठे तो महाराज शेरसिंह ने कहा- ''युवराज! आप बताइए। जंगल में रेलगाड़ी चलनी चाहिए कि नहीं?''

''बिल्कुल नहीं'' युवराज ने दो-टूक फैसला सुनाया।

''युवराज! क्या आप अपने इंकार का कारण बताने की कृपा करेंगे।'' पिंटू ने हाथ जोड़ते हुए पूछा।

''रेल की पटरियां बिछाने से बहुत से जानवरों के खेत बर्बाद हो जाएंगे। बहुत से कीमती पेड़ों को काटना पड़ेगा। मैं इतनी बड़ी बर्बादी नहीं देख सकता।'' युवराज ने बताया।

''लेकिन युवराज! रेलगाड़ी के फायदे भी बहुत है। वह बहुत तेज दौड़ती हैं।'' पिंटू ने बताया।

''तुम्हारी रेल चाहे कितना भी तेज दौड़ती हो हम जानवरों से तेज नहीं दौड़ सकती'' युवराज ने कहा।

''ऐसा नहीं है

युवराज, रेलगाड़ी की गति बहुत ज्यादा होती है'' पिंटू ने समझाने की कोशिश की।

''तो फिर ठीक है।'' युवराज ने महाराज शेरसिंह की ओर देखा फिर बोले– ''महाराज, पिंटू को २ कि.मी. पटरी बिछाने की अनुमति दे दीजिए। उसके बाद हमारी और इसकी रेल की दौड़ करवाई जाए। अगर रेल जीत जाए तो पूरे जंगल में रेल की पटरी बिछवा दीजिएगा। अगर रेल हार गई तो पिंटू इंजीनीयर को जनता का पैसा बर्बाद करने के अपराध में दरबार से निकाल दीजिएगा।''

महाराज ने पिंटू की ओर देखा तो उसने मुस्कराते हुए चुनौती स्वीकार कर ली। अगले दिन से ही जंगल में पटरी बिछाने का काम शुरु हो गया। पिंटू ने बड़ी–बड़ी मशीनें मंगवाई। ढेर सारे मजदूर लगाए और जोर–शोर से अपने काम में जुट गया।

पूरे जंगल में रेलगाड़ी और युवराज की दौड़ की चर्चा थी। आधे लोगों का मानना था कि रेलगाड़ी जीतेगी। आधे युवराज की जीत पक्की मानते। इसी तरह आधे जानवर पटरी बिछाने के लिए काटे जा रहे पेड़ों को जंगल की बर्बादी मानते तो आधे इसे विकास के लिए चुकाई जाने वाली छोटी सी कीमत।

पटरी बिछाने का काम पूरा होने वाला था। युवराज ने भी इस दौड़ को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया था। वह भी जी–जान से दौड़ के अभ्यास में जुट गया। उसे भी बस एक ही धुन सवार थी कि किसी तरह रेलगाड़ी को दौड़ में हराना है।

उधर पिंटू जानता था कि केवल २ कि.मी. की दौड़ में रेल कभी जीत नहीं पाएगी। क्योंकि रेल को अपनी पूरी गति प्राप्त करने में काफी समय लगता था जबकि शेर पलक झपकते ही पूरी गति से दौड़ने लगता है। हाँ अगर दौड़ २०–३० कि.मी. होती तो बात अलग थी।

काफी सोच–विचार कर वह एक दिन युवराज के पास पहुंचा और हाथ जोड़ते हुए बोला– ''युवराज इसमें कोई शक नहीं कि आप अपनी प्रजा का भला चाहते हैं। लेकिन अगर जान की सलामती हो तो मैं एक विनती

इस धरती को स्वर्ग बनायें

कविता : अनंत प्रसाद 'रामभरोसे'

जल जीवन है, सच्चा धन है
इससे ही पावन तन-मन है,
जीवन का हर काम जरूरी
पूर्ण करे, जल ही है धूरी,
हमको है अभियान चलाना
मिल जुल कल जल हमें बचाना,
आज करें यदि जल हम रक्षित
होगी पीढ़ी नई सुरक्षित,
अधिकाधिक हम पेड़ लगाएं,
इस धरती को स्वर्ग बनाएं
वन-उपवन नदियाँ समुद्र जल
खाई-पर्वत और धरातल
हैं माँ की सम्पदा धरोहर,
माँ भारती अतुल्य मनोहर,
इनके लिए समर्पित हो हम
जीवन भी अर्पित कर दें हम।

● सागरपाली (उ.प्र.)

करना चाहता हूँ।

''निश्चिंत होकर कहो।''– युवराज ने आश्वस्त किया।

''अपने जंगल में कीमती जड़ी–बूटियों, अच्छे फलों, शहद और कीमती लकड़ियों की भरमार है। लेकिन यहाँ इनकी कोई कीमत नहीं हैं।'' पिंटू ने कहा।

''यह बात तो सही है।'' युवराज ने सिर हिलाया।

''कुछ दिनों से भीमा गैंडे की तबियत काफी खराब है। अच्छा अस्पताल उसके घर से बहुत दूर है। अब न तो वह खुद अस्पताल जा सकता है और न ही कोई उसे लाद कर ले सकता है। इसी तरह दूर–दराज के इलाकों में रहने वाले जानवर भी अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ने नहीं भेज पाते। क्योंकि वह बहुत दूर है।'' पिंटू ने बताया।

''तुम कहना क्या चाहते हो?'' युवराज ने टोका।

''अगर जंगल का सामान दूसरी जगहों पर भेजा जा सके तो काफी पैसे मिल सकते हैं। उससे अपने जंगल का विकास किया जा सकता है। इसी तरह अगर बीमारों को समय से अच्छे अस्पताल भेजा जा सके तो उनकी जान बच सकती है। आने–जाने की सुविधा हो तो सभी के बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ सकते हैं।'' पिंटू ने विस्तार से बताया।

''तुम्हारी बात तो सही है लेकिन यह सब हो कैसे सकता है?'' युवराज ने पूछा।

''इसका एक ही उपाय है कि पूरे जंगल में रेलगाड़ी चलवा दी जाए।'' पिंटू ने कहा।

''अगर तुम्हारी रेल मुझसे दौड़ में जीत गई तो यह काम तो अपने आप हो जाएगा।'' युवराज मुस्कराए।

''फिर तो यह काम कभी नहीं हो पाएगा। क्योंकि रेल चाहे कितना भी तेज दौड़े आपसे नहीं जीत सकती।'' पिंटू ने चिंता भरे स्वर में कहा।

''तो क्या तुम चाहते हो कि मैं दौड़ में हार जाऊं? अपनी इज्जत लुटवा दूं?'' युवराज गुस्से से भड़क उठे।

''प्रजा की भलाई के लिए तो राजा महाराजा अपनी

।। २१ जून : विश्व योग दिवस ।।

मिलकर योग करें

कविता : विजय कुमार

योग करेंगे, स्वस्थ रहेंगे, आओ योग करें
मिलकर योग करें, आओ योग करें।
योग हमारी परम्परा, स्वस्थ रहो संदेश भरा
जन-जन में जागृति फैलाकर, सबके कष्ट हरें।
आओ योग करें, मिलकर योग करें।।
सुबह करें या शाम करें, आसन और व्यायाम करें
प्राणायाम साधना से फिर, लम्बी उम्र करें।
आओ योग करें, मिलकर योग करें।।
बिन खर्चे का ये साधन, नहीं उम्र का भी बंधन
महिला पुरुष बाल और बूढे नव उत्साह भरें।।
आओ योग करें, मिलकर योग करें।।
प्रकृति से खुद को जोड़ें, दुर्गुण से नाता तोड़ें
प्रेम और सद्भाव बढ़ेगा, विश्व शांति उभरे।।
आओ योग करें, मिलकर योग करें।।

• हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

जान तक जुटा देते हैं। मैं तो सिर्फ इतना चाहता हूं कि आप इस दौड़ में भाग न लें।'' पिंटू ने हाथ जोड़े फिर बोला– ''मुझे विश्वास है कि महाराज शेरसिंह जब एक बार रेलगाड़ी को चलता देख लेंगे तो उसे पूरे जंगल में चलाने की अनुमति दे देंगे।''

पिंटू की बात में दम था। युवराज सोच में पड़ गया। उसे भी लगने लगा था कि जंगल में रेल चलने के काफी फायदा हो सकता है। कुछ देर सोचने के बाद उसने कहा– '' दौड़ तो ही लेकिन उसमें मैं जान–बूझ कर हार जाऊंगा।''

''लेकिन युवराज, इससे तो आपकी काफी बदनामी होगी और मैं नहीं चाहता कि ऐसा हो।'' पिंटू ने कहा।

''अब कोई लेकिन वेकिन नहीं'' युवराज ने पिंटू के कंधों पर हाथ रखा फिर बोले'' तुमने मेरी तो आंखें खोल दी हैं लेकिन बहुत से जानवर ऐसे हैं जिन्हें रेल की क्षमताओं पर विश्वास नहीं है। वह पटरी बिछाने के लिए अपनी जमीन आसानी से नहीं देंगे। अगर रेलगाड़ी में मुझे हरा देती तो उन्हें उसकी ताकत पर भरोसा हो जाएगा और वे पटरी बिछाने का विरोध नहीं करेंगे।''

युवराज की महानता देख पिंटू ने हाथ जोड़ कर उन्हें धन्यवाद दिया फिर वापस लौट आया।

युवराज और रेलगाड़ी की दौड़ देखने के लिए पूरा जंगल उमड़ पड़ा। पिंटू ने अपनी रेल को खूब सजाया था। युवराज भी पूरे राजसी सज–धज में थे।

महाराज शेरसिंह ने हरी झंडी दिखाकर दौड़ शुरु करने का संकेत दिया। रेल का चालक जब तक सीटी बजा कर रेल आगे बढ़ाता युवराज छलांग मारते हुए दो फर्लांग आगे निकल गए। उनके समर्थकों की तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा जंगल गूंज उठा।

लेकिन एक बार रेलगाड़ी ने जब गति पकड़ ली तो फिर वह दौड़ती ही रही। उधर एक कि.मी. के बाद युवराज थकने से लगे थे। उनकी गति कम होती जा रही थी। देखते ही देखते रेलगाड़ी उनसे काफी आगे निकल गई और दौड़ जीत गई।

रेलगाड़ी के सर्मथकों ने पिंटू को अपने कंधों पर बिठा लिया और खुशी से नाचने लगे। महाराज शेरसिंह ने अपने वादे के अनुसार पूरे जंगल में रेल की पटरी बिछाने की अनुमति दे दी। बाकी जानवरों को भी रेलगाड़ी की ताकत पर भरोसा हो गया था। सभी ने अपनी जमीन खुशी–खुशी दे दी।

युवराज जान बूझ कर हारे हैं यह बात केवल पिंटू जानता था। उसने जब यह बात महाराज को बताई तो उन्होंने युवराज को गले से लगा लिया और उसकी पीठ थपथपाते हुए बोले– ''बेटे! तुमने प्रजा की भलाई के लिए बहुत बड़ा त्याग किया है। मुझे विश्वास है कि आगे चलकर तुम बहुत अच्छे राजा बनोगे।''

महाराज ने खजाने का मुंह खोल दिया। देखते ही देखते पूरे जंगल में पटरियां बिछ गई। कुछ दिनों बाद जब उन पर पहली ट्रेन चली तो पिंटू के साथ युवराज भी उस पर सवार थे।

चालक ने सीटी बजाई और फिर छुक–छुक कर रेलगाड़ी दौड़ पड़ी। छोटे–बड़े सभी जानवर उस पर सवार थे। सभी की आँखों में विकास का सपना लहरा रहा था।

● लखनऊ (उ.प्र.)

Pitambari Products Pvt. Ltd.

Thane Tel: 022-67035555, Toll Free No.: 180030701044. For Online Purchase www.pitambari.com/shop

।। बाल प्रस्तुति ।।

वीर बालिका

कहानी : अरूण मेवाड़ा

बहुत पुरानी बात है। एक गांव में गायत्री नाम की बालिका रहती थी। उसके पिता का नाम रामप्रसाद था। वे गाँव के विद्यालय में अध्यापक थे। वे गायत्री को बहुत प्यार करते थे। उन्होंने बहुत अच्छी तरह से उसका पालन–पोषण किया। उन्होंने उसे अच्छी तरह पढाया–लिखाया। गायत्री को बचपन से ही वीरों की साहस भरी कहानियाँ पढ़ने बहुत शौक था।

एक दिन की बात है। रात के समय रामप्रसाद के घर के अन्दर चार डाकू घुस गए। उसके पास बन्दूकें थीं। दो डाकू छत पर चढ़ गए और दो डाकू घर के अन्दर घुसकर रुपए पैसे और गहने आदि खोजने लगे।

गायत्री उस समय गहरी नींद में सोई हुई थी। जब खट–

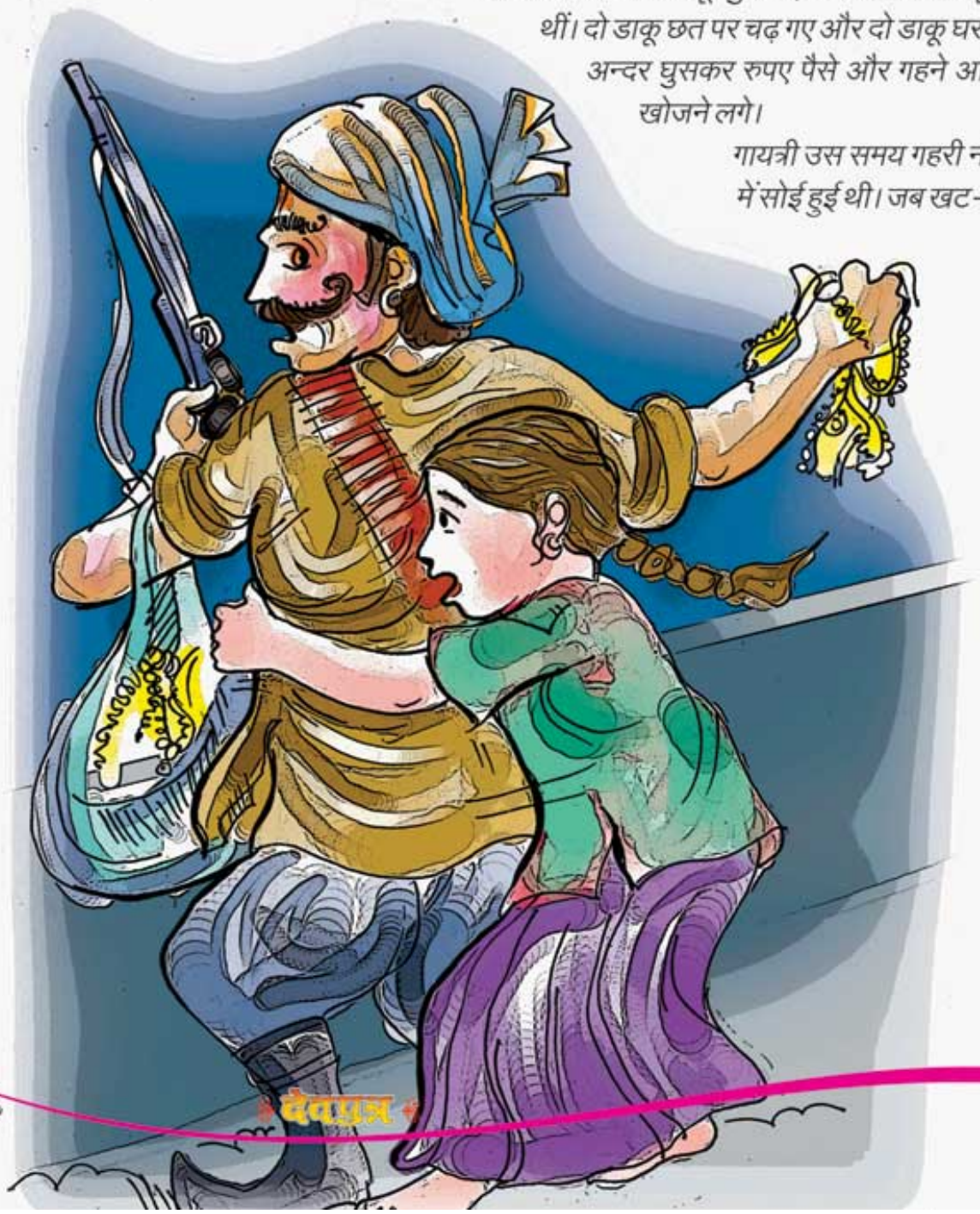

पट की आवाज होने लगी तो उसकी आँखें खुल गई। गायत्री समझ गई घर में चोर घुस आए है वह चुपचाप अपनी चारपाई से उठी और दबे पाँव जाकर उसने एक डाकू को पीछे से पकड़ लिया। वह डाकुओं का सरदार था। गायत्री ने शोर मचा दिया। शोर सुनकर उसके पिता भी जाग गए। वे तुरंत गायत्री की ओर दौड़े उन्हें पास आता देखकर दूसरे डाकू ने उन्हें गोली मार दी। गायत्री के पिता वहीं अचेत होकर गिर पड़े।

बन्दूक की आवाज सुनकर गाँव वालें भी जाग गए। वे भी गायत्री के घर आ गए। छत चर चढे डाकू उन्हें डराने के लिए हवा में दनादन गोलियाँ चलाने लगे।

गायत्री गोलियों की आवाज से डरी नहीं। वह मजबूती से सरदार को पकड़े रही। डाकुओं के सरदार ने छूटने के लिए बहुत प्रयत्न किया लेकिन उसकी सारी कोशिशें विफल हो गईं।

अपने सरदार को छुड़ाने के लिए डाकुओं ने गायत्री पर गोलियाँ चलाई। गोलियाँ लगने पर भी उसने सरदार को छोड़ा नहीं। गाँव वालों ने भी गोलियाँ चलाई। सरदार को भी कुछ गोलियाँ लगी और वहाँ गिर पड़ा। जब डाकुओं ने अपने को घिरा देखा तो वे छत से कूदकर भाग गए। गायत्री ने अपने प्राण त्याग दिए। लेकिन अन्त समय तक साहस नहीं छोड़ा। उस समय गायत्री की उम्र केवल 15 वर्ष थी।

सन् 1979 ई. में मृत्यु के बाद वीर बालिया गायत्री को पुरस्कार दिया गया था। भारत सरकार ऐसे साहसी बच्चों को प्रतिवर्ष पुरस्कार प्रदान करती है।

• H$mbmnrnb (_.à.)

आपकी पाती

देवपुत्र का अप्रैल २०१७ अंक भी परम्परानुसार बहुत मनभावन है। बालपन और बालमन के अनुकूल विविध रचनाओं का हँसता हुआ गुलदस्ता है। बाल प्रस्तुति के माध्यम से होनहार बिरवान को नियमित प्रोत्साहन प्रदान करना प्रशंसनीय सारस्वत कार्य है। साज-सज्जा एवं बहुरंगी चित्र तो पाठक के चित्त को प्रसन्न कर देते हैं। अपनी बात के अंतर्गत आपने उदाहरण सहित प्रेरणा के प्रयास को उजास-सा उजागर किया।

जन्मदिन अपनी माटी परिपाटी को ध्यान में रखते हुए ही मनाना चाहिए। भारतीय रंग-ढंग से यह उत्सव भी मनाया जाना आत्मीय आनंद का सटीक प्रतीक है। देशी चोंच को विदेशी दाना हास्यापद है। कृपया इसी प्रकार नई पीढ़ी को विशेष संदेश देकर धन्य करते रहिए, हार्दिक धन्यवाद।

• राजा चौरसिया, कटनी (म.प्र.)

* * * * *

मैं देवपुत्र का नियमित पाठक हूं। मुझे यह बहुत अच्छी लगती है और खासकर इसकी बाल सुलभ रचनाएँ, इसी से प्रेरित होकर मैंने कविता लिखना सीखा।

• योजेश्वर वत्स, गुरुग्राम (हरियाणा)

।। कॅरियर।।

जल प्रबंधन के क्षेत्र में रोजगार

आलेख : प्रो. जमनालाल बायती

पानी की कई जातियाँ हो सकती हैं– सामान्य पानी (जिसे जनसाधारण मीठा या पीने का पानी कहते हैं।), भारी पानी, खारा पानी, नदी का पानी, तालाब या पोखर का पानी, झील का पानी, कुएं का पानी, बावड़ी का पानी। रसायन शास्त्र के अनुसार पानी की तीन जातियां होती हैं– भारी, खारा तथा सामान्य पानी। व्यवहार में देखा जाता है कि भारी पानी में साबुन प्रयोग करने पर झाग नहीं बनता तथा बाल धोने के लिए काम में लेने पर बाल आपस में चिपक जाते हैं। कई व्यक्तियों के लिए भारी पानी उपयुक्त नहीं होता।

कारखानों से काम में आया पानी वहां के अन्य अपशिष्ट पदार्थों से मिलकर किस प्रकार वातावरण दूषित बना देता है– यह किसी से छिपा नहीं है। केन्द्रीय गंगा सफाई अभियान इसका प्रमाण है। कहीं–कहीं तो इस कारखानों का यह गंदा पानी इतना हानिकारक पाया गया है कि आदमी तो क्या, इस पानी में मछलियां भी मर गई, वे जीवित नहीं रह सकीं।

पानी की कमी वाले स्थानों पर पानी के प्रयोग को दोहराया जाता है। वहाँ खाट के ऊपर बैठ कर नहाएंगे, नहाने के काम में आया पानी खाट के नीचे बर्तन में संग्रह होता है, उससे कपड़े तथा बर्तन धोये जाएंगे तथा बर्तन धोने के बाद फिर वही पानी मवेशियों को पिलाया जाएगा। कितना दुर्लभ है पानी। पानी पर ही फसलें निर्भर करती हैं।

राजस्थान के कुछ जिलों में, जहाँ पानी बहुत कम बरसता है, पानी की एक बूंद भी व्यर्थ नहीं जाने देते। पानी संग्रह करने के बड़े बड़े होज या पक्के गहरे टांके बना रखे हैं। इन हौजों या टांकों के चारों और दूर–दूर तक ढलवा पक्का फर्श बना देते हैं जिससे पानी बिना जमीन में प्रवेश किये तालाब, हौज या टांके में संग्रह हो जाए। हौज या टांके ऊपर से ढके होते हैं।

यह प्रयास किया जा रहा है कि २०२० तक देश के सभी १.६ लाख गाँवों में निवासियों को सुविधाजनक दूरी पर, बिना किसी भेदभाव के पीने का पानी उपलब्ध हो जाए। सरकार प्रयत्न कर रही है कि देश के भिन्न–भिन्न भागों में पानी के परीक्षण के लिए प्रयोगशालाएँ प्रभावी सिद्ध हों, वहाँ निष्णात वैज्ञानिक शोध–कार्य करें, सरकारी प्रयत्नों के सिवाय वैज्ञानिकों, भूगर्भशास्त्रियों तथा सामाजिक कार्यकत्ताओं को प्राथमिकता के आधार पर पानी की समस्या का अध्ययन कर सुझाव प्रस्तुत करना चाहिए।

पाठ्यक्रम की विषय वस्तु

आबादी का घनत्व, आने वाले समय में आबादी के घनत्व में वृद्धि, उसका अनुमान लगा कर जल की आवश्यकता का अनुमान लगाना, पीने के पानी की आवश्यकता, आबादी बढ़ने से अधिक पानी की आवश्यकता, पानी का स्तर नीचे चला जाना, बढ़ती हुई आबादी के लिए अधिक सब्जियाँ, कितनी सब्जियाँ कम पानी चाहने वी पैदा करना, अतिरिक्त उद्योग–धंधे, कल–कारखाने, उनके लिए पानी की आवश्यकता, प्राकृतिक आपदा–अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, मवेशियों के लिए अतिरिक्त पानी, नए भवन निर्माण के लिए पानी की आवश्यकता, तरणताल के लिए पानी की आवश्यकता, मांसाहारियों के लिए अधिक मछलियों की मांग हेतु अधिक मछलियां पालने के लिए पानी की आवश्यकता, दोहरे या

तिहरे प्रयोग से पानी के प्रयोग से होने वाली बचत, किन-किन मदों में खारा या भारी पानी प्रयोग कर सकना, मानसून के देर से आने पर पानी की आवश्यकता, कारखानों का अवशिष्ट पदार्थ मिला पानी, उसका अनुमान लगाना, उसके बेहतर उपयोग की संभावना खोजना, मछलियों को उस पानी की शिकार होने से बचाना, नागरिकों द्वारा पानी की कृत्रिम कमी का प्रचार न करना, पानी के दोहरे या तिहरे या और भी अधिक प्रयोग के लिए नागरिकों को तत्पर बनाना, गंदे पानी को शुद्ध पानी में बदलने के लिए जनसाधारण को स्थितियों के अनुसार प्रशिक्षित करना आदि इन सभी बातों का जल प्रबंधन के पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए।

पाठ्यक्रम के संस्थान

भारतवर्ष में इस प्रकार का पाठ्यक्रम रुड़की में उपलब्ध है जहां जल प्रबंध के पाठ्यक्रम का शुभारंभ करके अग्रणी कार्य किया गया है। जोधपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एम.बी.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर में भी वाटर रिसोर्स एण्ड इरिगेशन इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इस प्रकार के स्ट्रक्चरल पाठ्यक्रमों के विकास की भारी संभावनाएं हैं। कई विश्वविद्यालय एम.एस.सी. पाठ्यक्रम में जल प्रबंधन एक प्रश्न-पत्र के रूप में तथा इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम में एक शाखा के रूप में प्रारंभ करने की योजना तैयार कर रहे हैं।

गत्यात्मक व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति इस क्षेत्र में अधिक सफल हो सकते हैं। तत्काल निर्णय लेने की क्षमता उनमें होती चाहिए, तनिक भी देर करना या सोच विचार में समय लगाना या बाद में निर्णय लेना या निर्णय उच्चाधिकारियों पर छोड़ देना भयंकर आपदा को आमंत्रण दे सकता है। उसे प्रत्युत्पन्न मति, नियंत्रण कार्य में चतुर, अनुमान लगाने में पारखी तथा समय का पाबंद होना चाहिए। उदाहरण के लिए मूसलाधार वर्षा हो रही है, तालाब भर गया है, अब यदि आप उच्चाधिकारियों के आदेश की प्रतीक्षा करते रहे तथा यदि तालाब का आधार कमजोर है तो भयंकर विपत्ति का सामना करना पड़ सकता है, उसे तत्काल ही, बिना एक क्षण खोये चादर खोल देने का निर्णय

लेना होना जिससे तालाब का अतिरिक्त पानी बह कर निकल जाए। उसे पानी की भिन्न-भिन्न जातियां जानने तथा उन पर प्रयोग करने में शोध करने में रुचि सम्पन्न होना चाहिए। इन सबसे अधिक उसे पानी संबंधी जन साधारण की कठिनाइयां जानने-समझने की आदत बनानी चाहिए। समग्र रूप से पानी के सही उपयोग के लिए जब भी समय तथा अवसर मिले, जनसाधारण को शिक्षित करने के लिए उसे तत्पर रहना चाहिए।

रोजगार की संभावनाएं

आज जल प्रबंधन का पाठ्यक्रम अत्याधिक महत्वपूर्ण है तथा इस पाठ्यक्रम के दिन-प्रतिदिन और अधिक महत्वपूर्ण होने की प्रबल संभावनाएं हैं। भारतवर्ष में अभी जल प्रबंध का पाठ्यक्रम नवजात शिशु के समान है जो आने वाले समय में महत्वपूर्ण स्थान बना लेगा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् तथा कौशल्या गंगा स्थित सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फ्रेश वाटर इक्कॉकल्चर की रिक्तियाँ के भी विज्ञापन निकलते रहते हैं। इस प्रकार जल प्रबंधन के पाठ्यक्रम में निष्णात व्यक्तियों की मांग निरन्तर बढती ही रहेगी। आने वाले १०-१५ वर्षों तक इस पाठ्यक्रम के शिक्षित व्यक्ति बेकार रहेंगे- ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता। कई राज्यों में जल प्रबंधन का कार्य कृषि विभाग से तो कुछ अन्य राज्यों में भूतल जल विभाग से जोड़ा हुआ है। पद किसी भी विभाग में हो, यह आशा की जानी चाहिए कि ऐसे पद भविष्य में निरन्तर बढ़ते रहेंगे।

• भीलवाड़ा (राज.)

पहली विजय

आग के चारों और युवक शिवाजी ग्रामीण युवा साथियों के साथ बैठे हैं। घर और खेत-खलिहान की बातें हो रही हैं जागीदार के बेटे होने पर भी शिवाजी मावलियों से इतने घुल-मिल चुके हैं कि उन्हें अपना सच्चा नेता मिल गया है। धीरे-धीरे कर बात तोरणा दुर्ग पर आ जाती है- ''यह किला अपना होता तो कितना अच्छा होता।''

''क्या ऐसा हो सकता है?'' एक युवक ने विस्मय से पूछा।

''अवश्य हो सकता है, यदि हम ऐसा चाहें।''

''होइ...।'' एक साथ तीन युवक बोल उठे।

''अच्छा होता, यदि सूबेदार इसे हमारे हवाले कर देता।''

''होइ...।'' तीनों युवक फिर एक साथ विस्मय से बोले। सभी मावली युवा सरदार सहमत हो गए।

एक ने सुझाया- ''हम उसे संदेश भेज दें कि बीजापुर के सुल्तान ने किला हमारे हवाले करने के लिए कहला भेजा है।''

शिवाजी ने तीन मावली सरदारों को सूबेदार के पास संदेश देने के लिए भेजा। ये वही युवक थे, जिन्होंने सर्वप्रथम अपनी सहमति 'होइ' कह कर दी थी। हिन्दू स्वराज्य के ये प्रथम तीन पक्षधर थे ये साजी कंक, तानाजी मालसुरे और बाजी पसालकर।

सुल्तान के संदेश देने की बात बचपने की-सी और प्रभावहीन ही थी। आखिर प्रमाण क्या होता? शिवाजी इस बात को अच्छी तरह समझते थे लेकिन उन्होंने साथियों का उत्साह नहीं तोड़ा।

किले में बीजापुर की सेना बहुत कम थी। उस पर किसी तरह के हमले की कोई आशंका भी न थी। किले का सूबेदार लापरवाह और लोभी था। शिवाजी ने संदेश का विश्वास दिलाने के लिए सोने की मुहरों की एक थैली साथ दी।

यह सोना भी युवा जागीरदार के पास कहां होता। लेकिन उन्होंने अपने संरक्षक दादा जी कोंड़देव को किसी तरह सोना देने पर राजी कर लिया था।

****

सूबेदार मराठा सरदारों की बात क्यों मानता। आखिर, किले की विजय के लिए सही कीमत चुकानी पड़ी। मामूली संघर्ष और रक्तपात के बाद किला युवकों की टोली के हाथ आ गया।

यह १६४६ ई. का वर्ष था और यह थी शिवाजी की पहली विजय।

(निरंतर अगले अंक में...)

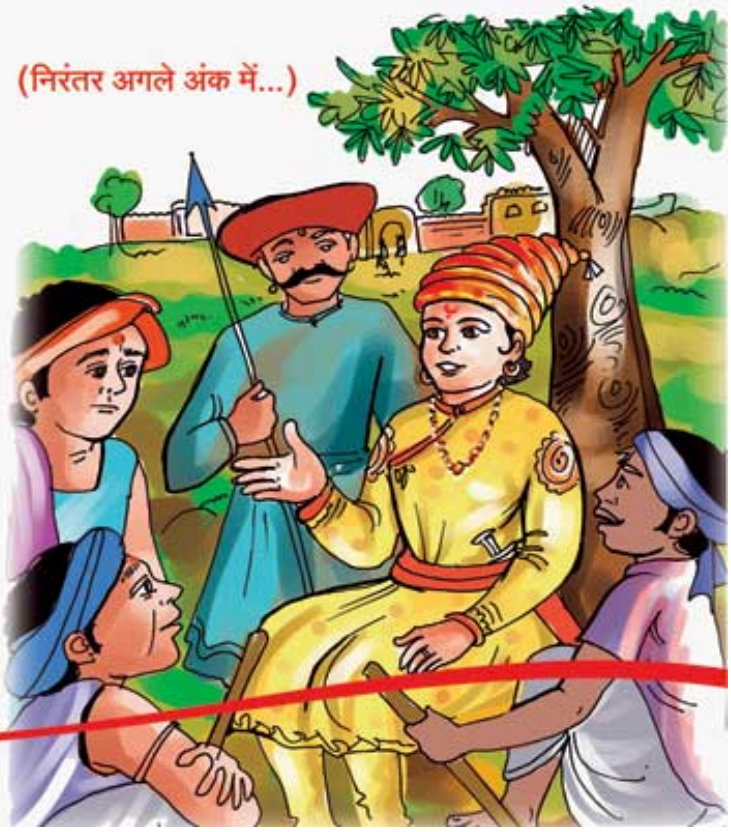

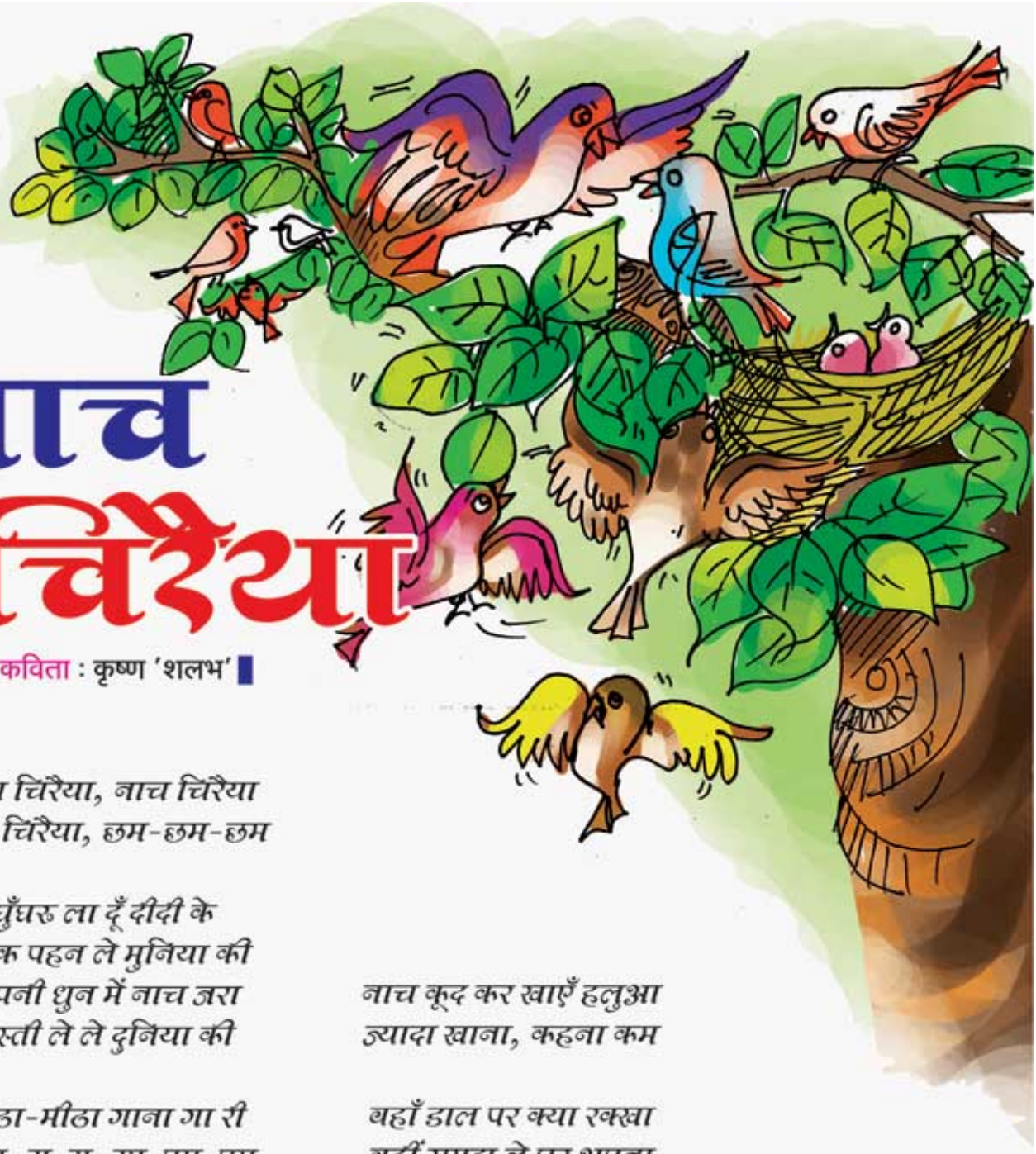

नाच चिरैया

कविता : कृष्ण 'शलभ'

नाच चिरैया, नाच चिरैया
नाच चिरैया, छम-छम-छम

घुँघरू ला दूँ दीदी के
फ्राक पहन ले मुनिया की
अपनी धुन में नाच जरा
मस्ती ले ले दुनिया की

मीठा-मीठा गाना गा री
तारा, रा-रा, रम-पम-पम

छोटा मैं हूँ छोटी तू
घबराती हैं इतना क्यूं?
अगर पकड़ ले हाथ मेरा
दोनों नाचें ठुमक ठूं

नाच कूद कर खाएँ हलुआ
ज्यादा खाना, कहना कम

यहाँ डाल पर क्या रक्खा
यहीं समझ ले घर अपना
दोस्त बना ले मुझको तू
फिर मुझसे कैसा डरना

रोज मंगा दूंगा बाबा से
टॉफी, रसगुल्ला, चमचम।

● सहारनपुर (उ.प्र.)

चिड़िया का संसार

कहानी : डॉ. रमेश पत्री

दस बारह साल का लड़का मंगलू का घर फूल बेड़ा गाँव में है। वह हर रोज अपनी गाय बैलों लेकर जंगल की और जाकर वहां पेड़ के नीचे चट्टान पर बैठ जाता है। वह अपना मन बहलाने के लिए अपने कमर में लटकी हुई बाँसुरी निकाल कर बजाता है। उसकी बाँसुरी में न जाने कैसी सुरीली मधुर आवाज होती है उसे सुन कर पेड़ पर बैठी हुई चिड़ियाएँ अपना चहचहाना भूल जाती है और मन भर बाँसुरी की मधुर आवाज सुनती हैं।

मंगलू का सिर के ऊपर नजदीक की टहनी पर एक रंगबिरंगी नन्हीं चिड़ियाँ रोज आकर बैठती है। भाव विह्वल होकर मंगलू को ताकती है। मंगलू के बाँसुरी बजाना बन्द कर देने से वह अपनी चोंच खोल कर चूँ–चूँ आवाज निकालती है। मानो बोल रही हो और सुनाओ, मंगलू और सुनाओ।

मंगलू देर तक चिड़िया को देखता है। उसके बाद उसकी बाँसुरी के जादूभरे स्वर से सारे जंगल में सूना पन छा जाता है। पेड़ पर बैठी बाकी सब चिड़िया भी चुप हो जाती है। जब मंगलू बाँसुरी बजाना बन्द कर देता है। तब वही नन्ही चिड़िया चि... चॉ... चहका मार कर कुछ कहती है।

मंगलू कहता है–''थक गया हूँ। बस आज ही। फिर कल सुनाऊँगा।''

देखते ही देखते साँझ ढल जाती है मंगलू अपनी गायों को लेकर राह भर धूल उड़ाते हुए घर लौटता है। इस तरह मंगलू के दिन पर दिन कैसे बीत जाते है वह भी समझ नहीं पाता है।

एक दिन की बात है दिन भर मंगलू ने बांसुरी बजाकर चिड़ियों को खुश किया। साँझ ढलने से पहले गायों के झुण्ड को चारों तरफ से इकट्ठा पेड़ के नीचे इकट्ठा किया। झट से उसकी निगाह नन्ही चिड़िया पर गई। अरे! यह क्या! जिस चिड़िया को वह रोज गीत सुनाता था उसका यह हाल। वह पेड़ के नीचे पंख फड़फड़ा रही है।

फौरन मंगलू ने चिड़िया को नीचे से उठाया। धीरे से उसे सम्हाला। पास के तालाब से पानी लाकर चोंच फाड़कर बूंद बूंद पानी पिलाया। कुछ समय बाद नन्ही चिड़िया अच्छी हो गई।

मंगलू उसको पेड़ की टहनी पर रखकर जल्द से जल्द घर लौटने लगा क्योंकि उस समय सूरज पूरा डूब चुका था। और पूनम का चाँद पूरब दिशा में निकल चुका था। मंगलू कुछ ही कदम आगे निकला कि किसी ने सुरीली आवाज से उसका नाम लेकर पुकारा–''ओ मंगलू, मंगलू।''

मंगलू ने चारों तरफ देखा। उसे किसने पुकारा उसको कुछ समझ में नहीं आया। कुछ समय बाद फिर वही पुकार–''मंगलू ओ मंगलू।''

मंगलू की नजर उस पेड़ की टहनी की ओर गई। चांद की चान्दनी में वह चिड़िया बहुत सुहानी दिखी। परन्तु क्या यह वहीं चिड़िया है। यह तो एकदम सोने जैसे रंग से

जगमगा रही है।

चिड़िया ने अपना आँख घुमा घुमा कर बोली– ''मंगलू, मैं वही चिड़िया, जो हर दिन तुम्हारा गीत सुनती है। तुम ने मेरी सेवा करके जीवन बचाया है।'' उसकी बात सुनकर मंगलू को बड़ा आश्चर्य हुआ।

चिड़िया हो कर इस तरह आदमी जैसे बात करती है? चिड़िया ने फिर कहा– ''मंगलू, आज में तुझे कुछ देना चाहती हूँ। तुम तुम्हारी मनचाही वस्तु मांग लो।''

मंगलू ने बोला– ''मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं सिर्फ तुझे चाहता हूँ। मैं इस तरह हर रोज बाँसुरी बजाता रहूंगा, तू सुनती रहेगी। बस मुझे इतना ही चाहिए और कुछ नहीं।''

चिड़िया ने कहा ''यह क्या ! नहीं, नहीं आज तुम कुछ भी मुझसे मांगना होगा।''

क्या मांगेगा इस सोच में मंगलू डूब गया था। झट ही उसके मन में एक अजीब सा ख्याल आया। वह कहा– ''हाँ हाँ नन्ही चिड़िया अब मैं मेरी मनपसंद चीज मांगूगा। क्या तुम दे सकोगी?''

''तुम जो माँगेगी मैं जरूर दूंगी।'' मंगलू ने कहा–''मुझे तुम्हारी चिड़िया दुनिया मैं ले जा सकोगी? नीले गगन में उड़ा पाओगी?''

चिड़िया ने कहा– ''ओ! इस बात के लिए मैं तुझको हमारे पक्षी चिड़ियों की तरह ले जाऊँगी। पक्षी की तरह नीले गगन के तले उड़ा पाऊंगी।

उसके बाद चिड़िया ने उसकी नीली आँखों को घुमाया। देखते ही देखते एक काला बादल मण्डराकर चांद को ढक दिया। तमाम जंगल में अन्धेरा छा गया।

कुछ देर बाद बादल हट गया। फिर से चांद दिखने लगा। उसकी चांदनी से सारे जंगल दिन जैसा हो गया। मंगलू सब कुछ भूल गया। वह अपने को अच्छी तरह देखा। वह पूरी तरह एक चिड़िया में बदल गया है।

चिड़िया के साथ मंगलू पहले जैसा बात करने लगा। अरे! यह क्या? उसका गले का आबाज चिड़ियाँ की चहचहा जैसा ची–चॉ, ची–चॉ सुनाई देता है। मंगलू ने सुनहरी नन्हीं चिड़िया के साथ चिड़िया बोली में मन भर बात किया। सुनहरी चिड़िया के साथ वह भी नीले गगन के तले उड़ने लगा। आह! क्या आनन्द अजीब सी अनुभूति। मंगलू का शरीर हल्का और मन उत्फुल्ल हो उठा। दूर आकाश से धरती का बन, पहाड़, रास्ता पनघट, गाँव व जमीन ये सब बहुत सुन्दर लगते थे। वह आकाश में इधर–उधर चारों और उड़ान भर कर अन्त में थक गया।

उसके बाद मंगलू ने सुनहरी चिड़ियां के साथ ऊँचे–ऊँचे पहाड़ के उस पार नीचे की ओर ढलने लगा। नीचे बड़े–बड़े पेड़ फूल पत्ते से लदे अपनी घनी टहनी पसार रहे थे। उस पेड़ों पर तरह तरह की चिड़ियाएं तरह तरह के घोंसला बनाकर रहती हैं। कोई चिड़िया पेड़ की ओट से तो कोई घोंसला से ची–चाँ चहका मारती है।

सुनहरी चिड़िया ने मंगलू को अपनी घोंसले के अन्दर ले गया। वहाँ उसके माता–पिता थे। उनने अपनी चहचहा बोली में नई चिड़िया के बारे में बहुत सारी बातें पूछी।

सुनहरी चिड़िया ने अपने माँ–बाप को सब कुछ बताया। नर और मादा चिड़िया ने मंगलू को बहुत प्यार दिया। चोंच से चोंच लगाकर लाड़ प्यार जताया। चहचह बोली में ढेर सारी बात की। सुनहरी को माँ अपनी घोंसले को अन्दर से बेर जैसा जंगली फल लाकर मंगलू की चोंच में डाला। बा! इतना मीठा फल। मंगलू ने कभी भी नहीं खाया था।

कुछ समय बाद सुनहरी चिड़िया ने चहका मारा उसकी चह चहा से पेड़ के सारे चिड़िया उसकी घोंसला के आस पास इकट्ठे हो गए। वे अपनी चहका बोली में ढेर सारी बातें की। सभी ने मंगलू को अभिनन्दन किया। अपने को अपने घोंसला को आमंत्रण किया।

सुनहरी के साथ मंगलू ने सभी के घोंसलों को गया। रंग–बिरंग चिड़ियाओं ने उसका बहुत आदर सत्कार किया। कई घंटों तक अजीब चिड़ियों से बात करते करते मंगलू को थकान आ गयी। उसकी आँख अपने आप लगा गई। वह गहरी नींद में सो गया।

इतने में बहुत समय बीत गया। गाय बैले की रंभाने से मंगलू चौक पड़ा और नींद टूट गयी। वह आँखों को मसलते हुए अपने को जंगल की उसी चट्टान पर लेटे हुए दिखा कि पौ पूरब दिशा में फटने लगा है। बाल सूरज अपने सुनहनी किरणों के साथ निकल रहा है। गायें इधर–उधर चरने चली गई हैं। मंगलू ने अपने सिर के ऊपर के टहनी के तरफ आँख बढ़ाया। उस पर पहली बाली वही नन्ही चिड़िया बैठे हुए आँख घुमा–घुमा कर ची–चुँ, ची–चु चहका मारती है मानो वह पूछ रही हैं ''मंगलू–मंगलू हमारी पक्षी दुनिया कैसी लगी? अच्छी लगी।''

● सुवर्णपुर (ओडिसा)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *अयोध्या में श्रीराम, लक्ष्मण और जानकी को वन में छोड़ने कौन गए थे?*
- *वह महारथी अर्जुन का पुत्र था और युद्ध में उसने पिता को हरा कर बन्दी बना लिया। उस महायोद्धा का क्या नाम था?*
- *पारसियों का धर्मग्रंथ चार वेदों में से किस वेद पर आधारित है?*
- *अवन्तिका किस मोक्षदायिनी नगरी का प्राचीन नाम है?*
- *प्रसिद्ध ग्रंथ पंचतंत्र की रचना किस विद्वान ने की?*
- *मगध साम्राज्य धननन्द के महामात्य राक्षस का वास्तविक नाम क्या था?*
- *किस वेद में सबसे पहले हवा में उड़ने वाले विमानों का वर्णन किया गया है?*
- *अंग्रेजों की आँखों में धूल झोंक कर बच निकलने वाले महान क्रांतिकारी तात्या टोपे कब तक जीवित रहे?*
- *कुतुबुद्दीन एबक को युद्ध में पराजित करने वाली मेवाड़ की वीरांगना कौन थीं?*
- *अफ्रीका में योग सिखाने वाले इदरीश शेआ भारत में किस देश के राजदूत थे?*

(साभार : पाथेय कण)

(उत्तर इसी अंक में)

छोटे से बड़ा

पर्यावरण दिवस पर बड़ी संख्या में पौधारोपण किया गया।
आप जरा पता तो लगाइए कौन सा पौधा है किससे बड़ा?

(उत्तर इसी अंक में।)

ई-मेल

आलेख : डॉ. बनो सरताज

ई–मेल Electronie Mail संदेश भेजने और प्राप्त करने का वो तरीका है जो digital devices जैसे कम्प्यूअर tablets और मोबाइल फोन द्वारा उपयोग में लाया जाता है।

सन् १९६० से ई–मेल का प्रचलन हुआ एवं १९७० तक सइ का महत्व स्वीकार कर लिया गया। आरंभ में ई–मेल सर्विस द्वारा संदेश भेजने और संदेश प्राप्त करने वाली, दोनों की ऑन लाइन उपस्थिति अनिवार्य थी पर आज ये आवश्यक नहीं है। आधुनिक ई–मेल पद्धति accept-forward-delivered एवं store पर आधारित है।

१९७१ में प्रथम Arpanet मेल भेजा गया। १९७७ तक वो standardised working system का स्थान प्राप्त कर चुका था।

वर्तमान इंटरनेट के निर्माण में ई–मेल का महत्वपूर्ण भाग है। १९८० में Arpanet से Internet तक की यात्रा आज की ई–मेल सेवा की नींव है।

ई–मेल शब्द का प्रयोग कब आरंभ हुआ, ये निश्चित नहीं है। १९९३ में पहले email फिर e-mail शब्द प्रयुक्त हुए। आरंभिक रूप में ई–मेल सेवा मात्र mail, के रूप में प्रचलित हुई। Electronic-mail का एक अकेला टुकड़ा message कहलाता था।

प्रथम ई–मेल १९७१ में PDP-10-2, कम्प्यूटरर्स के मध्य कैम्ब्रिज भेजा गया। भेजने वाले थे कम्प्यूटर इंजीनियर रे टॉम लिनसन (Ray Tom LInson)। प्रथम विशाल नेटवर्क Arpanet, भेजने में रे की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

@ का चिन्ह भी सर्वप्रथम रे महोदय ही ने उपयोग किया था। उन्होंने एकserver से दूसरे server पर उपस्थित कम्प्यूटर पर संदेश भेजना संभव बना दिया था जो अल्प समय में संपूर्ण विश्व में लोक प्रिय हो गया।

प्रथम ई–मेल, रे महोदय ने स्वयं अपने नाम भेजा, message था Testing,1-2-3।

यद्यपि ई–मेल के अविष्कारक होने का श्रेय रे टॉम लिन्सन के नाम दर्ज है पर रे स्वयं स्वीकार करते थे कि ई–मेल तकनीक के विकास में कई और वैज्ञानिकों का योगदान रा है। उन वैज्ञानिकों में भारतीय अमरीकी वी.ए. शिवा अय्या दुरई (V.A.shiva Ayya Durai) का नाम शीर्ष पर है।

इलेक्ट्रानिक मेल के आरंभ होने के एक वर्ष पश्चात् Transmission Control (TCP) एवं Internet Prorocol (IP), को डिजाइन किया गया।

१९८३ तक ई–मेल, इंटरनेट पर दो कम्प्यूटरों के बीच सम्प्रेषण का माध्यम बन गया था। उन में से एक File Transfer Protocol (FTP) की सहायता से इंटरनेट का उपयोग करने वाले किसी भी

कम्प्यूटर से जड़ित होकर फाइले download कर सकते हैं।

१९८३ में Arpanet के Miletary भाग को Milenet, में डाल दिया गया और तीन वर्षों पश्चात् SSF,Net को लाँच करके विस्तृत पैमाने पर तकनीक पर प्रयोग किए गए।

आज yahoo.com, Hot mail.com, Rediffmail.com, Gmail.com आदि की तूती बोली रही है।

दूसरी ओर ३० अगस्त १९८२ को अमरीकी शासन ने ई–मेल के लिए कम्प्यूटर प्रोग्राम के अविष्कारक के रूप में वी.ए. शिवा अय्या दुरई को Recognition दिया, सम्मानित किया।

न्यू जर्सी के लिविंग्सटन (Livingston), हाई स्कूल में पढ़ाई के दौरान वी.ए. शिवा ने ई–मेल पर काम आरंभ किया। वो काम उन्होंने University ऑफ Medicine and Dentistary के लिए हाथ में लिया था।

१९७८ में उन्हें सफलता मिली, उन्होंने Inter-office mail का अविष्कार किया और उसे email नाम दिया।

१९८२ में शिवा ने ई–मेल के कॉपीराईट प्राप्त कर लिए। ये आवश्यक भी था क्योंकि साफ्टवेयर की सुरक्षा का और कोई उपाय न था। कॉपी–राईट प्राप्त करना, पेटेंट करने जैसा ही महत्वपूर्ण निर्णय था।

वी.ए. शिवा ने अपने इस कारनामें के लिए, हाई स्कूल छात्रों के लिए सुरक्षित Westing Housing science Talent Search Award प्राप्त किया।

वी. ए. शिवा ने जब ई–मेल का अविष्कार किया तब वो मात्र १४ वर्ष के थे। उन के ई–मेल में Inbox, out box, Compase, Send, Reply, Folder आदि समस्त सुविधाएं उपस्थित थीं जो आज भी ई–मेल का हिस्सा हैं।

ई–मेल के संबंध में कुछ रोचक तथ्य निम्नलिखित हैं–

इंटरनेट का उपयोग करने वाले ९५ प्रतिशत व्यक्ति प्रतिवर्ष नया अकांउट खोलते हैं।

विश्व में प्रति सेंकड ३५–४० लाख से अधिक ई–मेल भेजे जाते हैं।

४३ प्रतिशत से अधिक ई–मेल मोबाइल से भेजे, पढ़े जाते हैं।

५६ प्रतिशत ऑन–लाइन जानकारी फेस बुक से शेयर की जाती है।

ई–मेल से मात्र ७ प्रतिशत जानकारी प्राप्त की जाती है।

२१ प्रतिशत व्यक्ति ई–मेल को Spam कर देते हैं, ये जानते हुए भी कि वो Spam नहीं है।

२०१६ में ई–मेल अकाउंट की संख्या ४.३ अरब की सीता तक पहुंच गई है।

● चन्द्रपुर (महा.)

पिकनिक

कहानी : डॉ. शशि गोयल

प्रियांशु ने विद्यालय से आकर दरवाजा खोला और बस्ता फैंक रसोई घर की ओर भाग लिया पर इतनी देर में ही उसे लगा कमरे में कोई था। वह लौट कर आया कुछ भी नहीं सब कुछ तो वैसा ही था। उसने एक बार फिर शक से कमरे में नजर डाली कुछ उसे भागता सा लगा था। लगता है कमरे में चूहे हो गए हैं, माँ...माँ लगता है मेरे कमरे में चूहे हैं।'' उसने खाने की मेज पर अपना शक माँ के सामने जाहिर किया।

चूहे और यहाँ बेटा यह फ्लैट की पाँचवी मंजिल है। यहाँ कहीं पाईप बगैरह भी पास नहीं है जो बालकनी से चूहा आ जाए नही बच्चे... चूहा नहीं होगा वैसे ही लगा होगा। कहकर माँ ने उसकी प्लेट में खाना डालने लगी। नही माँ मुझे यह मूँग की दाल नहीं खानी उसने प्लेट सरका दी। मुझे कुछ और खाना है कुछ चटपटा सा। वह प्लेट छोड़कर वापस कमरे में आया। अब उसने ध्यान से देखा तो उसका शक पक्का हो गया। उसके कमरे में कोई तो आया था। उसके खिलौने सब इधर-उधर थे सही जगह पर अधिकतर नहीं रखे थे। प्रिय बंदर की पूँछ बाहर अटकी हुई थी। भालू ऊपर था तो नीचे ही रखा था। उसकी डॉल की एक टांग नीचे एक टांग ऊँची थी। टैडी बीयर तो उल्टा ही था।

प्रांशु कई दिन से देख रहा था कि उसके खिलौने अधिकतर उसे लगता था कि कोई छेड़ता है। अपनी जगह होकर भी जैसे अपनी जगह नहीं होते थे। वे इधर-उधर सरके होते थे। उसके शोकेस का शीशा सरका होता कभी झिरी होती। वह फिर माँ के पास जा पहुँचा।

''माँ क्या चुटकी आई थी?''चुटकी ! नहीं तो उसकी माँ तो अभी बाहर दालान साफ कर रही है। चुटकी प्रांशु के यहाँ काम करने वाली बाई की बेटी थी जो उसकी हम उम्र थी। वह उसके खिलौने बहुत रुचि से देखती रहती थी। कभी-कभी बहुत पुराने खिलौने वह उसे दे भी देता था। जरूर चुटकी चुपके से आई होगी। मां को मालूम नहीं पड़ा होगा। उसने ही खिलौने निकाले होंगे या पांच नम्बर वाला गोलू आया होगा। गोलू की माँ भी माँ के पास बहुत आती हैं। गोलू की आदत भी है चीजों को छेड़ने की। वह तो कभी उसके खिलौने नहीं छूता। गोलू के पिताजी दुबई से कितने इलेक्ट्रानिक खिलौने लाए। ड्रोन वाला हवाई जहाज तो वह अपनी बालकनी से ही उड़ा रहा था एक बार तो वह नीचे गिर भी गया था। बड़ा अच्छा हुआ। बड़ी शान मार रहा था। अबकी बार जन्मदिन पर पिताजी से वह वही लेगा। उसने गुड़िया को ठीक से रखा और टैडी बियर सीधा किया तब तक माँ ने आवाज लगा दी।

'चल ले मैंने भेलपुरी बना दी है। वह खा ले चल फिर ट्यूशन जाना हैं। माँ मेरे सारे खिलौने उल्टे-पुल्टे थे। माँ आप मेरी अलमारी में ताला लगवा दो। जरूर इन्हें कोई छेड़ता है।' प्रांशु बार-बार अपना शोकेस देख रहा था। तभी उसे लगा कि उसके बंदर ने मुँह बनाया और टैडी बियर की ओर देखा है। पर फिर कुछ नहीं।

प्रांशु चला गया टैडी बियर ने अपनी गरदन ठीक की उफ् आज तो पकड़े ही गए थे। तुम लोगों से कहा था समय का ध्यान रखा करो पर तुम लोग भी मानते नहीं हो, किसी दिन ताला लग गया तो हिल भी नहीं पाएंगे। अब सब चुपचाप ठीक से अपनी जगह खड़े रहो। कुछ ही देर में प्रांशु आता होगा अब कोई हरकत मत करना। बंदर तू सबसे ज्यादा ऊधम करता है।' प्रांशु के पास जब वह छोटा था तब सबसे पहले टैडी बीयर ही आया था इसलिए टैडी बियर अपने को सबसे बड़ा बुजुर्ग मानता था और सब खिलौनों को डाँटता रहता था। डौली तो बहुत छोटी थी इसलिए चढ़ने से रह गई और जब तक चढ़ पाती प्रांशु अंदर आ गया वह लटकी रह गई।

प्रांशु जब से बड़ा हुआ है स्कूल ट्यूशन और बाहर खेलने से फुरसत ही नहीं मिलती थी। अब तो खिलौने निकालता भी नहीं था और किसी को देता भी नहीं था। खिलौने बंद शीशे में खड़े घबरा जाते थे और उनका मन

होता कि वो हवा में खेले कूदे। खड़े खड़े हाथ पैर अकड़ जाते ऊपर से धूल जम जाती थी।

प्रांशु के जाते ही वे सब बाहर निकल आते जिराफ अपनी लम्बी गरदन से शीशा सरका देता और फटाफट सब नीचे कूदते। बंद करने की जिम्मेदारी बंदर पर थी वह हाथ से शीशा खींच देता था पर उस दिन तो उसकी पूंछ ही अटकी रह गई। बच गई कट जाती। ही मैन और स्पाइडर मैन तो कूदते फाँदते झट चढ जाते और बीच में खड़े हो जाते थे हाँ स्पाइडर मैन की पीठ पर बैठ कर सब कमरे के चक्कर खूब लगाते थे। अबकी डोरेमान बोला– ''कल मैं जाकर रिमॉट वाला गैजेट ले आऊंगा वह दरवाजा खोल बंद कर दिया करेगा।''

''काका बात तो सही कही है पर आपको क्या फर्क पड़ता है? आप कौन सा उतर कर खेलते हो वहीं टहल लेते हो, कभी भाग कर तो देखो उस समय कितनी मुश्किल होती है पर एक बात है आप सलाह अच्छी देते हो।'' बंदर ने अपनी लंबी पूँछ एक तरफ सरकाई और ठिकाने से लगा दी।

ऊपर एक तरफ टॉमी गरदन हिलाए जा रहा था तो मोटी सेठानी ने उसे चाँटा लगाया, ''अब कौनसी हवा चल रही है जो गरदन मटकाए जा रहा है चुप शांत बैठ।''

मोटा सेठ जोर से हँसा उसने तोंद पर हाथ फेरा और बोला– ''प्रांशु की दराज से चॉकलेट खानी है।''

अब चुप हिलो मत अब कल सुबह तक सब शांत बैठो प्रांशु आता होगा। तभी प्रांशु मोबाइल पर बात करता आया, ''कल सूरज! तू क्या लाएगा? मैं तो चिप्स और नमकीन के पैकेट ले जाऊँगा। पूरी कौन खाएगा? चल मजा रहेगा। अभी सामने की दुकान से लाता हूँ सामान।''

प्रांशु के दोस्त की बात सुनकर सब खिलौनों ने आँख मिलाई। सब चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। वाह! लगता है प्रांशु कल कहीं जा रहा है। तभी प्रांशु के पिताजी आए–''प्रांशु कितने बजे विद्यालय छोड़ना है। शाम का पता है बस कितने बजे लौटेगी।''

''हाँ पिताजी! शाम सात बजे विद्यालय पर ही आएगी, सुबह छः बजे बस चली जाएगी पिताजी् नहीं तो चिड़ियाएँ मिलेगी नहीं न...''

''ठीक है मैं छोड़ दूँगा सब सामान रख लेना बेटा! एक स्वेटर बैग में रख लेना लौटने में ठंड हो जाएगी।''

''हाँ पिताजी! प्रांशु ने कहा और पिताजी के साथ पिकनिक का सामान लेने चला गया। वाह! वाह! कल तो मजा आ जाएगा हम भी पिकनिक मनाएंगे कल तो साबू जोर से हँसा।

''अरे बाप रे ये साबू जरा धीरे...मरवाएगा। क्या? चाचा चौधरी ने अपनी छड़ी से उसे टहोका। साबू ने गरदन नीचे कर ली। रात को प्रांशु ने खाने पीने का सामान मेज पर रख लिया।

''अरे बाप रे! ये क्या ले आया है

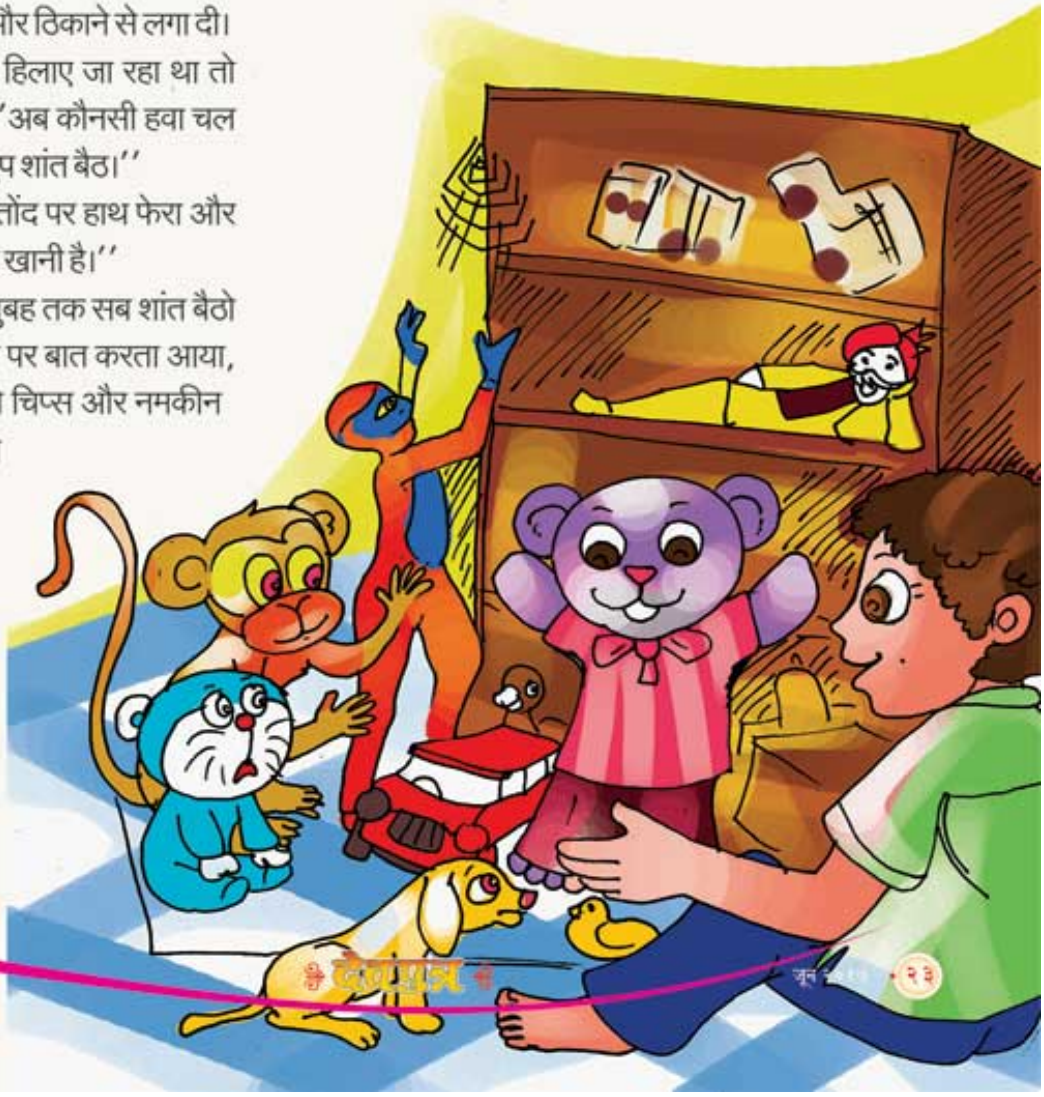

इतना खा लेगा।'' माँ ने इतने सारे पैकेट देखे तो कहा। माँ दोस्त भी तो है प्रांशु सामान बैग में रखने लगा। दोस्त नहीं लाएगे.... माँ ने प्रांशु की ओर देखा तो चुप फिर बोला लाएंगे पर माँ बस में और क्या करेंगे घूमने में भूख बहुत लगती हैं।

''घर में तो मुँह में कुछ चलता नही है हर समय खुशामद करती पड़ती है। उन्होंने बडा पाव लपेट कर रखते हुए कहा। और चलो पानी की बोटल और ले लो।'' प्रांशु जब माँ के साथ पानी लेने गया बंदर जल्दी से कूदा और एक पैकेट चिप्स के पलंग के नीचे सरका कर चढ़ कर फिर अपनी जगह जाकर बैठ गया।

सुबह जब तक सब खिलौनों की आँख खुली तो प्रांशु जा चुका था। सबने अपने बदन झाड़े और बाहर कूद आए। चाचा चौधरी तो आकर प्रांशु के पलंग पर लेट गए। मुई मेरी तो कमर दुख गई है जरा देर लेट लूँ।''

''चलो पहले कुछ देर नाचा जाए, फिर खेलेंगे छिप्पम छुपाई, ठीक है।'' डौली बोली।

चलो पहले कुछ देर नाच गाना हो जाए फिर उसने गाना शुरु कर दिया। उसके साथ साथ सब नाचने लगे कि धड़ाम से दरवाजा खुला। प्रांशु खिसियाया सा घुसा क्योंकि कोहरा बहुत घना था इसलिए पिकनिक निरस्त हो गई थी लेकिन जब उसने नाचते अपने खिलौने देखे तो हैरान रह गया।

''अरे वाह! मेरे दोस्तो!... तुम तो सब सच्चे दोस्त हो मुझे तो मालुम ही नहीं था कि तुम चल लेते हो मैं तो तुम लोगों के साथ पिकनिक मनाऊंगा।'' प्रांशु भी खुश और खिलौने भी खुश कि अब अलमारी में केवल खड़े रहने की सजा से बच जाएंगे।''

● आगरा (उ.प्र.)

राजकुमार जैन राजन को डॉ. राष्ट्रबंधु सम्मान

सम्मान में प्राप्त राशि अनाथ बच्चों के लिए दान की

कानपुर। भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर के तत्वावधान में आयोजित ५८वें सम्मान समारोह में आकोला, चित्तौड़गढ़ (राज.) के सुप्रसिद्ध साहित्यकार राजकुमार जैन राजन को प्रतिष्ठित डॉ. राष्ट्रबंधु स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह जुगलदेवी सरस्वती विद्या मंदिर के भव्य सभा कक्ष में रविवार २६ फरवरी २०१७ को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ट साहित्यकार एवं नव निकष के संपादक डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय ने की, मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व विधायक भूधर नारायण मिश्र, विशिष्ठ अतिथि के रूप में प. रामकृष्ण तेलंग, रामनाथ महेंद्र, एवं कमलकिशोर उपस्थित थे।

इस अवसर पर बाल साहित्य सृजन, बाल कल्याण एवं साहित्य उन्नयन के क्षेत्र में विश्व स्तरीय उल्लेखनीय कार्यों के लिए संस्थान के मुख्य सम्मान राष्ट्रबंधु स्मृति सम्मान से राजकुमार जैन राजन को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, अंग वस्त्र, श्रीफल व नगर राशि भेंट कर सम्मानित किया। राजन ने सम्मान में प्राप्त राशि को अनाथ एवं बेसहारा बच्चों के सहयोगर्थ सुभाष चिल्ड्रन सोसाइटी, नोबस्ता, कानपुर को दान कर दी।

इस अवसर पर लक्ष्मी खन्ना सुमन (नैनीताल), महेश मेनरिया मिलन (आकोला), डॉ. इरफान ह्यूमन (शाहजहांपुर), राकेश चक्र (मुरादाबाद), आद्या प्रसाद सिंह (सुल्तानपुर) आदि को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया। संस्थान अध्यक्ष एस. बी. शर्मा ने संस्थान के बारे में जानकारी देते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

पंजाब का राज्य पुष्प

सफेद कुमुदिनी

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

चट्टानी भागों का पौधा,
औषधीय गुण वाला।
धवल श्वेत फूलों से सजकर,
लगता बड़ा निराला।।
भारत सहित कई देशों में,
अपनी छटा दिखाता।
मिस्र और यूनान आदि से
इसका गहरा नाता।।
बाग-बगीचों की शोभा यह,
खेती भी कर सकते।
विषवाला होने के कारण,
बिल्ली पालक डरते।।
अंग सभी उपयोगी इसके,
कंद मूल सब खाते।
और सुगन्धित फूलों से हम,
महँगे इत्र बनाते।।
कंद, पराग और फूलों से,
औषधि खूब बनाते।
साधारण से जटिल रोग तक,
जड़ से दूर भगाते।

● भोपाल (म.प्र.)

सही उत्तर

संस्कृति प्रश्नमाला

(१) सुमन्त (२) बभ्रुवाहन (३) अथर्ववेद (४) उज्जैन
(५) पं. विष्णु शर्मा (६) कात्यायन (७) ऋग्वेद
(८) सन् १९०९ (९) राजमाता कर्मदेवी
(१०) बरकिना फासो।

छोटे से बड़ा

५, २, १, ७, १०, ३, ४, ९, ६, ८

उतर गया बुखार

कहानी : डॉ. राजीव गुप्ता

सोनू गधा को कई दिनों बुखार आ रहा था।

पहले तो उसके माता–पिता ने इस पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। उन्होंने सोच कि मौसमी बुखार होगा, अपने आप ठीक हो जाएगा। पर जब ७–८ दिन बीतने के बाद भी बुखार ठीक नहीं हुआ, बल्कि बढ़ता ही चला गया और सोनू ने कमजोरी के मारे चारपाई पकड़ ली तो उन्हें चिंता हुई।

सोनू के पिताजी मोनू उसे लेकर चंपा वन के काबिल डॉक्टर जेरु जिराफ के दवाखाने पर गए। उस समय वहाँ मरीजों की भीड़ लगी हुई थी। मोनू के पिताजी ने कम्पाउण्डर से पर्चा बनवाया और बाहर बैठाकर अपनी बारी आने का इंतजार करने लगे।

उनकी बारी आने में पूरा एक घंटा लगा गया।

''कहो क्या हुआ, सोनू बेटे ?'' चेम्बर में घुसते ही डॉ. जेरु ने पूछा।

''डाक्टर साहब, इसे ८ दिन से बुखार आ रहा है। उतर ही नहीं रहा है'' मोनू ने कहा।

''आठ दिनों से... लेकिन आप तो आज दिखाने आ रहे हैं?''

मैं समझा कि मौसमी बुखार है। एक दो दिन में ठीक हो जाएगा। इसीलिए मैं खुद ही केमिस्ट से लाकर इसे दवाईयाँ देता रहा।'' मोनू ने कुछ झिझकते हुए कहा।

''नहीं बुखार को कभी मामूली तौर पर नहीं लेना चाहिए। इससे आगे चलकर इसके बिगड़ जाने का खतरा रहता है।'' कहते हुए डॉ. जेरु ने सावधानी पूर्वक सोनू का परीक्षण किया।

''इसे तो टायफायड फीवर है। लापरवाही करने से यह जानलेवा भी हो सकता है।'' उन्होंने पूरे आत्मविश्वास से कहा।

''टायफायट फीवर?'' यह क्या होता है, डाक्टर साहब ?'' मोनू भौचका सा था।

''यह बुखार एक तरह के बैक्टीरिया से होता है, जिसका नाम सैल्मोनैला टाइफोसा है। यह दूषित पानी पीने से या उससे धुली फल सब्जी आदि खाने से हो जाता है।

''डाक्टर काका! मुझे किसी भी खाने की वस्तु में स्वाद नहीं आता है।'' सोनू ने कहा।

''स्वाद कै से आएगा बेटे! तुम्हारी जीभ

तो बुखार के कारण गंदी है। इस पर तो मैल की परत जमा हो गई है।''

''परन्तु इसका स्वाद से क्या संबंध है?'' सोनू ने कुछ हैरानी से पूछा।

''बहुत संबंध है, बेटा सोनू। हम जो कुछ भी खाते हैं, उसका स्वाद हमें जीभ से ही मालूम पड़ता है कि वह खट्टी–मीठी, कड़वी या चरपरी है। मालूम है कैसे?''

''नहीं तो... आप बताइए न?''

''दरअसल जीभ पर छोटे–छोटे तन्तुओं से युक्त सैकड़ों दानेदार उभार होते हैं। इन्हें स्वाद कलिकाएँ कहते हैं। इन्हीं से हमें किसी वस्तु के स्वाद के बारी में जानकारी मिलती है। पर जब जीभ मैली होती है तो मैल की परत इन स्वाद कलिकाओं को ढंक लेती है। इसलिए हमें किसी भी खाने की वस्तु का स्वाद ठीक–ठाक पता नहीं चल पाता है। मुख का स्वाद भी कड़वा–कड़वा सा लगता रहता है।'' डॉ. जेरू ने समझाया।

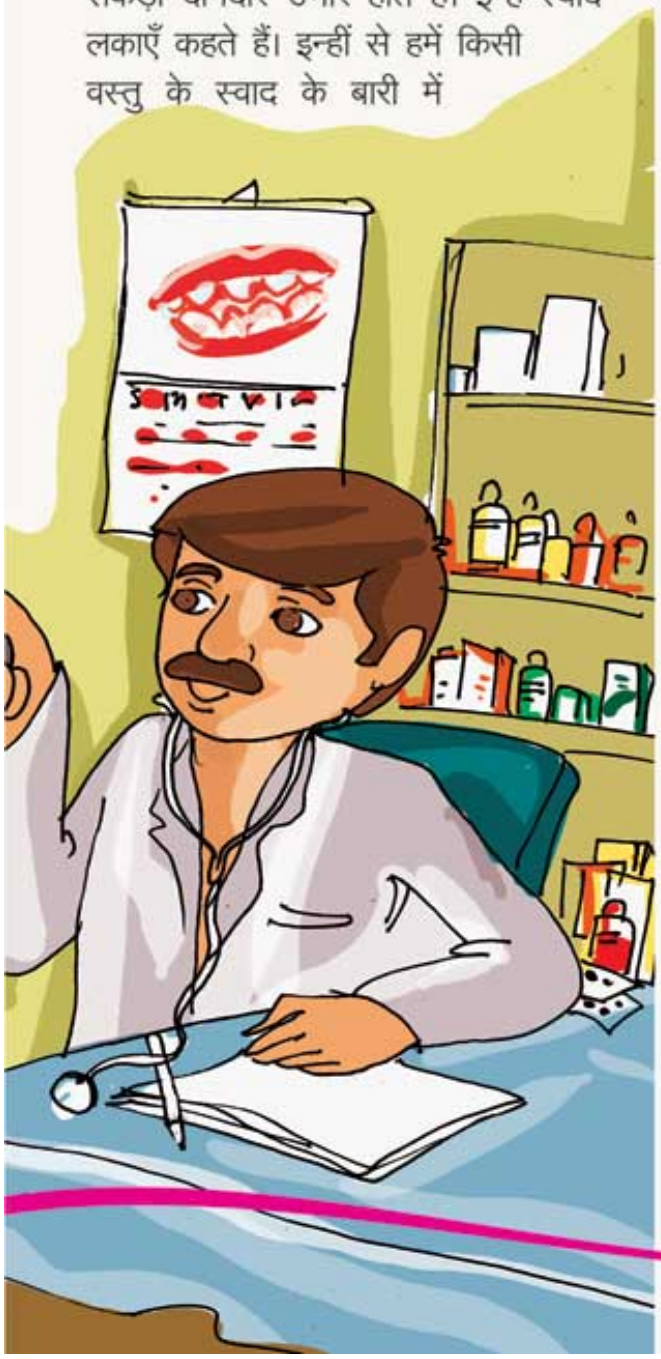

ओह, तभी डाक्टर काका मुझे हर खाने की चीज कड़वी–कड़वी सी लगती है।'' सोनू के बात समझ में आ गई थी।

''पर डॉक्टर साहब सोनू ठीक तो हो जाएगा?'' चिंतित होते हुए मोनू ने पूछा।

''हाँ मोनू जी, आप बिल्कुल भी चिंता मत कीजिए। आपका बेटा बिल्कुल ठीक हो जाएगा। पर आपको इसके खून की जांच करवाना पड़ेगी।'' डॉ. जेरू ने उसे दिलासा देते हुए कहा।

''वह किसलिए?''

''रोग का ठीक–ठाक पता लगाने के लिए और रोग कितना बढ़ चुका है, यह भी जानने के लिए।''

''यह कौनसी जाँच है?''

''इसे विडाल टेस्ट कहते हैं। इससे टायफायड रोग की सही–सही जानकारी हो जाती है।'' एक पर्चे पर जाँच और कुछ दवाईयाँ लिखते हुए डॉ. जेरू बोले– ''यह जाँच करवाने के बाद आप मुझ से कल मिलें। तब तक के लिए ये दवाईयाँ खिलाइए। खाने के केवल दूध और फल ही दें और पूरी तौर से सोनू को आराम करवाएँ।

मोनू ने डॉ. जेरू की बात मान कर ऐसा ही किया। कुछ ही दिनों में सोनू बिल्कुल ठीक हो गया। अब जब भी घर में कोई बीमार पड़ता, वह तुरंत ही डॉक्टर जेरू से सलाह लेते, जिससे कहीं रोग बिगड़ न जाए।

● **फर्रुखाबाद (उ.प्र.)**

फंस गए

चित्रकथा - देवांशु वत्स

पेड़

कविता : डॉ. प्रभा पंत

माँ मुझको भी खुरपी दे दो
मैं भी पौध लगाऊँगा।
सींचूँगा पानी से उसको,
मैं भी पेड़ उगाऊंगा।
पेड़ बड़ा जब होगा मेरा,
चिड़ियाँ गीत सुनाएँगी।
आम लगेंगे जब उस पर,
कुतर-कुतर कर खाएँगी।
चिड़ियों के संग खेलूँगा
पेड़ों पर चढ़ जाऊँगा।
ऊँची डाल पर लगा आम
पेड़ पर चढ़ कर खाऊंगा।

• हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

।। बाल प्रस्तुति ।।

प्रकृति की सुंदरता

कविता : सायली पिंगले

• इन्दौर (म.प्र.)

भगवान ने बनाई प्रकृति
है विश्व की अद्भुत कृति
है मितभाषी पर इसकी अद्भुत श्रुति।
इंसान, प्राणी, पौधे, पक्षी
सब है इस पर निर्भर
प्रकृति जीवन की साक्षी
खुशियाँ और सुंदरता देने को रहती तत्पर।
बहती नदियाँ, बहते झरने
है कितने अनमोल
कल-कल-कल-कल
बहते पानी का है न कोई तोल
ऊँचे-ऊँचे पहाड़ खड़े हैं
लंबे-लंबे पेड़ घने हैं
पृथ्वी पर रहते पशु-पक्षी भी
बड़े अनमोल है बड़े भले हैं।
प्रकृति की सुंदरता है अपार
जीवन की है इस पर भरमार
मत करो नष्ट इसे
मत करो भ्रष्ट इसे
प्रकृति माता है हमारी
सुंदर, अनमोल, अच्छी, न्यारी।

पहाड़ों की सैर

कहानी : सुधा विजय

एक बार बिल्लो बकरा और गप्पू भेड़ बाजार में मिले। दोनों एक दूसरे से मिलकर बहुत खुश हुए।

बिल्लो ने कहा– ''कहो दोस्त कैसे हो? बहुत दिनों बाद मिले।''

गप्पू बोला– ''क्या कहूँ दोस्त, अभी कुछ दिनों काम की बड़ी व्यस्तता थी। मैं कल ही यात्रा से लौटा हूँ।

बिल्लो बोला–''काम कर के तो मैं भी ऊब गया हूँ, क्यों न हम अपने कुछ दोस्तों के साथ छुट्टी पर चले।''

गप्पू भी खुश होकर बोला–''वाह, यह तो बहुत अच्छा सोचा। क्यों न हम पहाड़ों का रुख करें। वैसे भी कल से तीन दिनों की छुट्टी है।''

बिल्लो बोला– ''ठीक है।''

मैं अपने दोस्त खरचू खच्चर के साथ कल तुम्हारे घर पूरी तैयारी के साथ आता हूँ। हम क ल शाम ही बस पकड़कर पहाड़ों का प्रदेश सरित वन पहुँच जाएंगे। वहाँ के राजा मंगलसिंह ने पौधारोपण का कार्यक्रम चलाकर पहाड़ को हरा भरा रखा है। उन्होंने पहाड़ों को और अच्छा जानने के लिए ट्रेकिंग की व्यवस्था भी की है।''

गप्पू बोला– '' अरे वाह, तब तो बहुत मजा आएगा। देखो कोई भी ज्यादा सामान नहीं लाए। मैं भी अपने दोस्त पीकू हिरण और जैकी खरगोश को इस बारे में जानकारी देता हूँ।''

दोनों मित्र अपने घर की ओर चले और अगले दिन सभी गप्पू के घर मिले।

गप्पू ने कहा– ''दोस्तों, मैंने टिकट ले लिया है। बस हमें सरिता वन तक छोड़ देगी। उसके बाद हम पहाड़ों पर ट्रेकिंग करेंगे।''

सबने उत्साहपूर्वक तालियाँ बजाई और सफर पर निकल पड़े। वे अपना सामान बस के ऊपर रखने लगे। जहाँ सबका बैग हल्का था वही खरचू का बैग सबसे भारी था।

जैकी उसे छेड़ते हुए बोला– ''क्यों यार खरचू, तुमने पूरा घर ही बैग में समेट लिया है क्या?''

पीकू भी बोला– ''छोड़ भी, सामान तो वही ढोएगा।

थोड़ी नोक–झोंक और गाना गाते बजाते हुए जल्दी ही वे निर्धारित स्थान पर पहुँच गए। अभी भोर का समय था।

बिल्लो ने सलाह दी– ''दोस्तो, चलो थोड़ी देर धर्मशाला में आराम कर लेते है। सुबह छः बजे हमारे इंस्ट्रक्टर, तिंदली तेंदुआ से मिलना है।

सुबह होते ही हल्का नाश्ता करके वे सब एक स्थान पर खड़े हो गए।

''वाह ऊँचा पर्वत हरे भरे वादियों से ढका कितना सुंदर लग रहा है''– गप्पू अपने कैमरे से तस्वीर लेते हुए बोला।

''बिल्कु ल, आगे आपको और भी मनोहर दृश्य दिखेंगे।''– तभी तिंदली तेंदुए ने कहा।

फिर उसने उन्हें सुरक्षा के बारे में जानकारी दी जिसे

सभी ने बड़े ध्यानपूर्वक सुना।

फिर आई चढाई की बारी। सभी बारी–बारी से रस्सी के बंधे चढाई करने लगे। दोपहर होने को था और वे एक सुंदर घाटी तक ही पहुँचे थे कि तभी एकाएक मौसम ने करवट बदली और अंधकार छाने लगा। झमाझम बारिश के साथ ओले गिरने लगे।

जैकी डरता हुआ बोला– ''अरे, यह क्या हो रहा है।''

''पहाड़ियों में तो ये आम बात है। चलो, जल्दी से टेंट बनाए''– तिंदली तेंदुए ने कहा।

सभी टेंट बनाकर उसमें दुबक गए।

''अब तो भूख भी लगने लगी।'' गप्पू ने पेट को सहलाते हुए बोला।

''मैं कुछ बिस्कुट लाया हूँ, आओ खाए–''बिल्लो ने बोलकर बैग खोला।

''हाय, मैं तो जल्दी में उसे घर पर ही छोड़ आया।'' वह झेंपते हुए बोला तो सबने रोनी सूरत बना ली।

तभी खरचू बोला– ''चिंता न करो दोस्तो! तुम सबके लिए मेरे पास कुछ है।''

खरचू ने बैग में से पैकेट निकाला जिसमें ढेर सारे मठरी और लड्डू थे। सभी उसे चाव से खाने लगे।

जैकी बोला– ''वाह खरचू, तुमने तो दूर की सोची। तुम्हारा बैग तो जादू का पिटारा है।''

तभी तिंदली बाहर से आकर बोला– ''दोस्तो! हमें रात यही बितानी पड़ेगी। मेरा अनुमान है कल तक मौसम फिर अच्छा हो जाएगा।''

रात गहराने लगी और ठंड बढ़ने लगी। सभी ने खरचू के लाए खाने को खाया। तिंदली ने आग जलाई और सभी हाथ सेंकने लगे।

''कितना रोमांचक है'' पीकू ने कहा।

सभी ने हाथ को रगड़ते हुए सर हिलाया।

''हाय, लेकिन रात भर इस कड़कड़ाती ठंड में तो मेरा कचूमर ही निकल जाएगा– ''जैकी बोला।

तिंदली, गप्पू के खाल तो मोटे थे सो उन्हें ठंड की उतनी चिंता नहीं थी पर बिल्लू, पीकू, को भी चिंता होने लगी।

तभी खरचू बोला– ''दोस्तो! चिंता न करो, मैं अपने साथ तीन कंबल भी लाया हूँ जो हम सबके काम आएँगे।''

सभी ने राहत की सांस ली।

पीकू बोली– ''वाह, तुमने तो बड़ी समझदारी दिखाई। क्या तुम पहले भी यहाँ आए हो?''

खरचू हँसते हुए बोला– ''नहीं पीकू! मैं भी पहली बार ही पहाड़ों की सैर पर आया हूँ। मैंने किताबों से और दूसरों के अनुभव से जाना कि पहाड़ में मौसम बदलता रहता है इसलिए थोड़ी बहुत तैयारी के साथ ही आया हूँ।

बिल्लो बोला– ''इस बैग में और क्या है?''

खरचू ने बैग खोलते हुए बोला– ''टार्च, लाइटर, फल, छाता, दो फोन चार्जर, खाने की वस्तु, एक बैग कूड़ा डालने के लिए।''

खरचू बोला– ''हमें पहाड़ों को प्रदूषण मुक्त रखना है तो कूड़ा–करकट यहाँ वहाँ नहीं डालना चाहिए।''

गप्पू बोला– ''सचमुच दोस्त! तुमने तो बहुत अच्छा किया। अब हम भी ऐसा ही करेंगे।''

उस रात कंबल ने उन्हें बचा लिया। अगले दिन मौसम साथ–सुथरा था और वे दोबारा ट्रेकिंग पर चलें। उन्होंने पहाड़ों के बीच सूरज को उगले देखा, तरह–तरह के पेड़–पौधों, पत्तियाँ देखीं। अखिरकार वे एक झिलमिल झील के पास पहुँचे।

तभी तिंदली तेंदुए ने इशारा कर बोला– ''दोस्तो! वहा देखो।''

उन्हें एक विशालकाय पर्वत को दिखाया जिसके शिखर बर्फ से ढके हुए थे। उसकी चोटी मानो आसमान को छूती हो।

सभी अपनी थकान भूल कर उस पर्वत को छूने के लिए दौड़ पड़े। जैकी ने ढेरों फोटो खींचे।

'''शाम होने से पहले हमें यहाँ से निकलना है– ''तभी तिंदली ने कहा तो सभी मानो नींद से जागे।

''ये अनुभव हम कभी नहीं भुलगें–''बिल्लू ने कहा तो सभी ने हामी भरी।''

वे अपना बैग टाँग कर लौटने लगे। उन्होंने तो अपनी अगली छुट्टी यही मनाने की सोची है। दोस्तो! तुम कब कर रहे हो पहाड़ों की सैर?

पेड़ जीवन की आस है

कहानी : माणक तुलसीराम गौड़

पेड़ों को मत काटो भाई
पेड़ों को मत मारो भाई,
इनको मत दफनाओ भाई
इनसे करलो प्रेम सगाई।
पेड़ है तो सांस है
जीवन का एहसास है,
पेड़ सब की आस है
हम सबका विश्वास है।
पेड़ है तो पानी है
हम सब की जिंदगानी है,
वरना बात बेमानी है
हम सब की नादानी है।
पेड़ हैं तो छाया है
सिर पर हमारे साया है,
सब की निरोगी काया है
बाकी झूठी माया है।
पेड़ों से ही शुद्ध हवा है
बिन पैसों की ये दवा है,
उड़ते पंछी इनके गवाह है
इनसे हित रोज सवा है।
पूर्वजों ने पेड़ लगाए
वे हमारे ही काम आए,
ये एहसान चुकाकर जाएँ
यह बात हम भूल न जाएँ।
जिसने पेड़ पर चलाई आरी
अपने पाँव कुल्हाड़ी मारी,
वह इंसान कितना अनाड़ी
कब तक ऐसे चलेगी गाड़ी।
आओ हम सब मिल पेड़ लगाएँ

● बैंगलूरु (कर्नाटक)

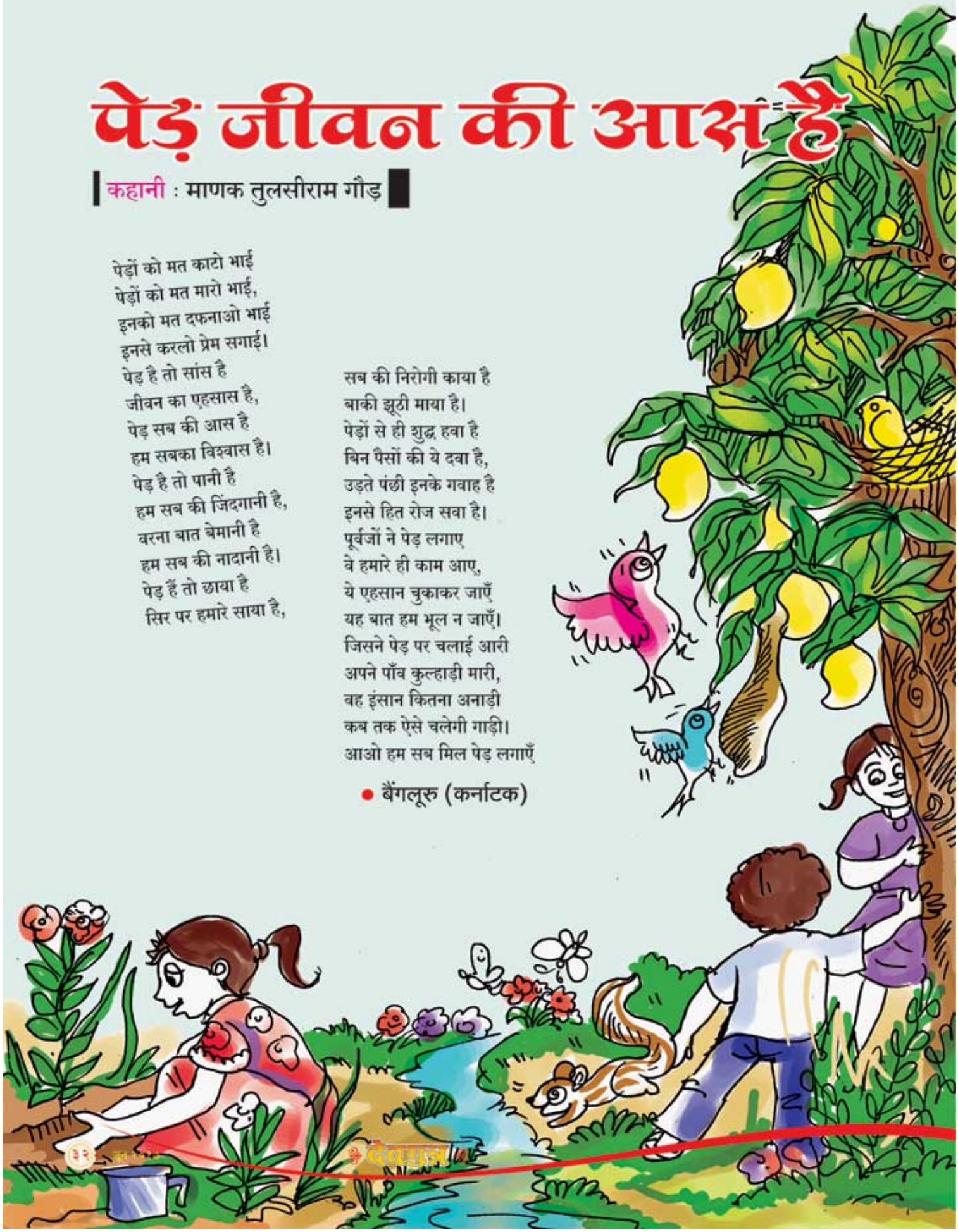

पेड़ पेड़ तुम जिंदाबाद

कविता : सुधा गुप्ता 'अमृता'

पेड़ पेड़ तुम जिंदाबाद
करते दुनिया तुम आबाद
भूख लगे तो फल देते हो
धूप लगे तो छाया
गर्मी में पंखा झलते हो
करते दान समूची काया
कटता है जब कोई वृक्ष तो
मौन मुखर करते संवाद
आंधी तूफां से लड़ जाते
शूरवीर हो तुम जांबाज
पड़ें बीमार दवा देते हो
अंत समय तक देते साथ
अपने पत्ते झरा झराकर
स्वयं बना लेते हो खाद
बीज गिरा भू पर अपने तुम
फिर फिर से उग आते हो
जीवन रुकता नहीं कहीं पर
सबको ये सिखलाते हो।

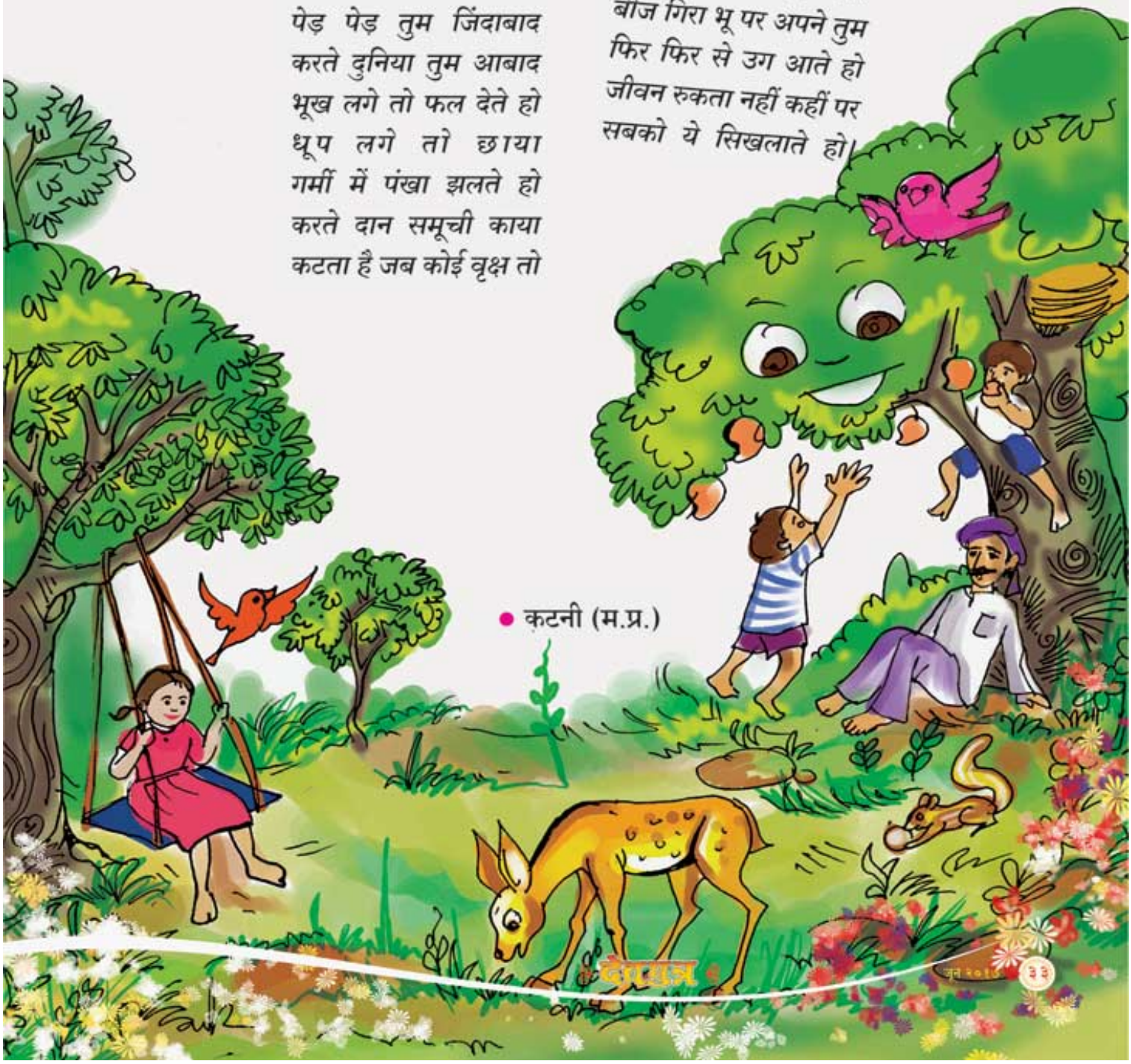

• कटनी (म.प्र.)

आम का पेड़

कहानी : बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'

आम का पेड़ 'बचाओ बचाओ' चिल्लाता रहा। मगर उसे कोई बचाने नहीं आया। दोनों लकड़हारों ने आम के पेड़ को आरी से काट कर जमीन पर गिरा दिया।

आम का पेड़ जमीन पर गिरते ही जोर जोर से कराहने लगा। आम के पेड़ पर बनाए पक्षियों के सारे घोंसले टूट कर इधर–उधर बिखर गए, तथा घोंसले में पड़े सारे पक्षियों के अंडे टूट कर चकनाचूर हो गए।

आम का पेड़ पक्षियों के घोंसले और अंडे नष्ट हुए देखकर कुछ देर तक रोता रहा और उठने को छटपटाता रहा।

आम के पेड़ के जड़ में एक गेहूंअन सांप रहता था। उसे आम की पीड़ा नहीं देखी गई। वह दोनों लकड़हारों से बदला लेने के लिए उन्हें डस लिया।

सांप के डसते ही दोनों लकड़हारे भी 'बचाओ बचाओ' चिल्लाने लगे। मगर आम की तरह उन्हें भी कोई बचाने नहीं आया। सांप के जहर से दोनों लकड़हारों की वही मौत हो गई।

लकड़हारों के मरते ही आम का पेड़ सांप को उसकी बहादुरी की बधाई दे कर हमेशा के लिए आंखें बन्द करके सो गया।

शाम को आम के पेड़ पर रहने वाले सारे पक्षी जब वापस आए तो आम के पेड़ की दशा कर रोने लगे।

सभी पंक्षियों को रोते देखकर सांप सारे पक्षियों को आम के पेड़ की सारी कहानी उनसे सुनाकर बोला ''अब रोने धोने से कोई फायदा नहीं होगा। जो होना था वह हो गया।''

सांप की बात सुनकर सारे पक्षी बोल पड़े–''हम आम के पेड़ को खड़ाकर के फिर इस पर अपना घोसला बनाएंगे।''

तोता, बगुला, नीलकंठ, कोयल, कौवा, कठफोड़वा, गौरेया, सारस, मैना, किलहर की ऐसी बातें सुनकर सांप बोला अब आम का पेड़ कभी खड़ा नहीं हो सकता है। यह तो जड़ से समाप्त हो गया है। अब तुम सब को किसी दूसरे पेड़ पर अपना नया घोंसला बनाना होगा।'' सांप की इतनी बात सुनकर सारे पक्षी एक साथ

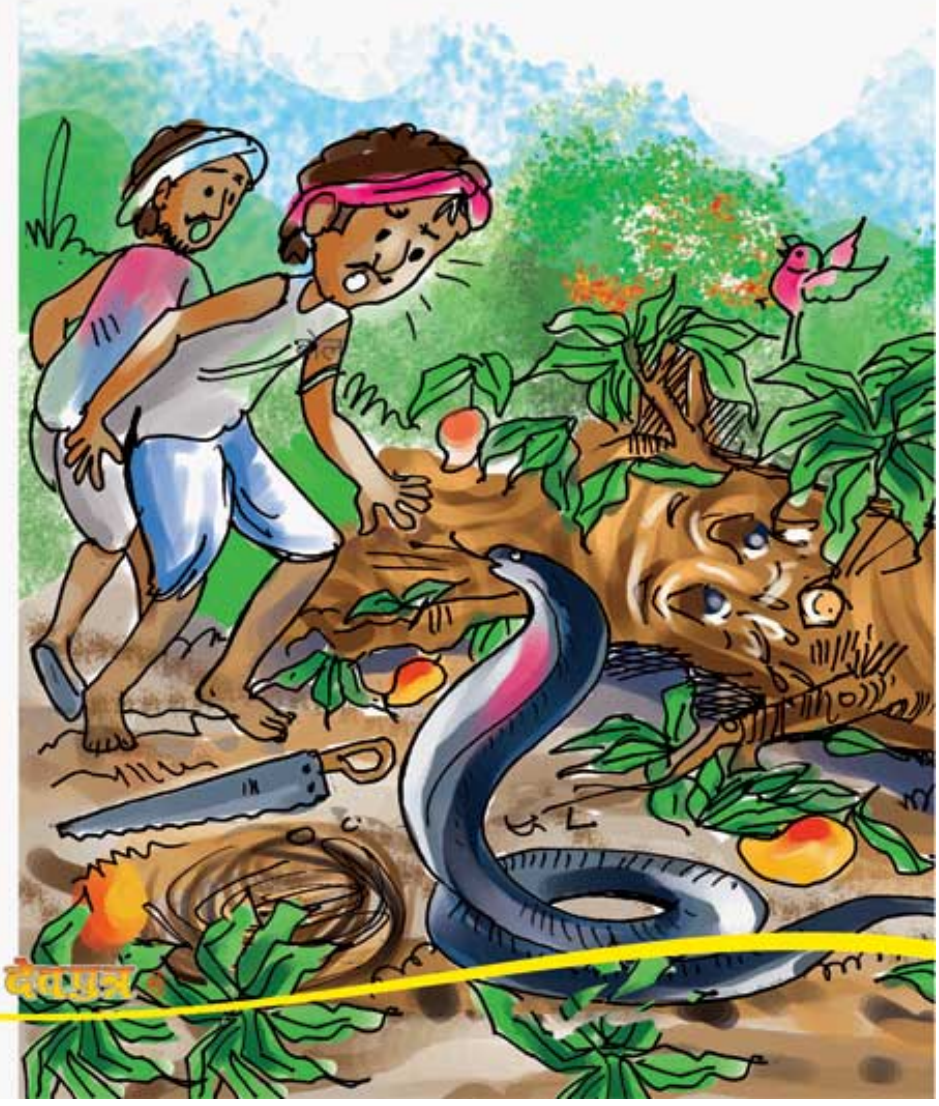

पड़े अब हम किस पेड़ पर अपना घोसला बनाएं? ''

तभी कुछ दूर पर खड़ा एक दूसरा आम का पेड़ बोल पड़ा। ''मेरे प्यारे प्यारे पक्षियों हमें अपार दुख है कि तुम सबका घर उजड़ गया। मगर अब चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं अभी जिन्दा हूं। तुम सब हम पर अपना अपना नया घोंसला बना कर रह सकते हो।''

दूसरे आम के पेड़ की बात सुनकर सारे पक्षी प्रसन्न हुए और उस पर अपना नया घोंसला बनाने को राजी हो गए।

सांप ने अपनी दोस्ती दिखाते हुए कहा अब ऐसी मुसीबत कभी नहीं आएगी। मैं वादा करता हूं आम के पेड़ की हर मुसीबत में रक्षा करूंगा। सांप को अपना नया दोस्त पाकर सारे पक्षी खुशी से हंस पड़े।

● गोरखपुर (उ.प्र.)

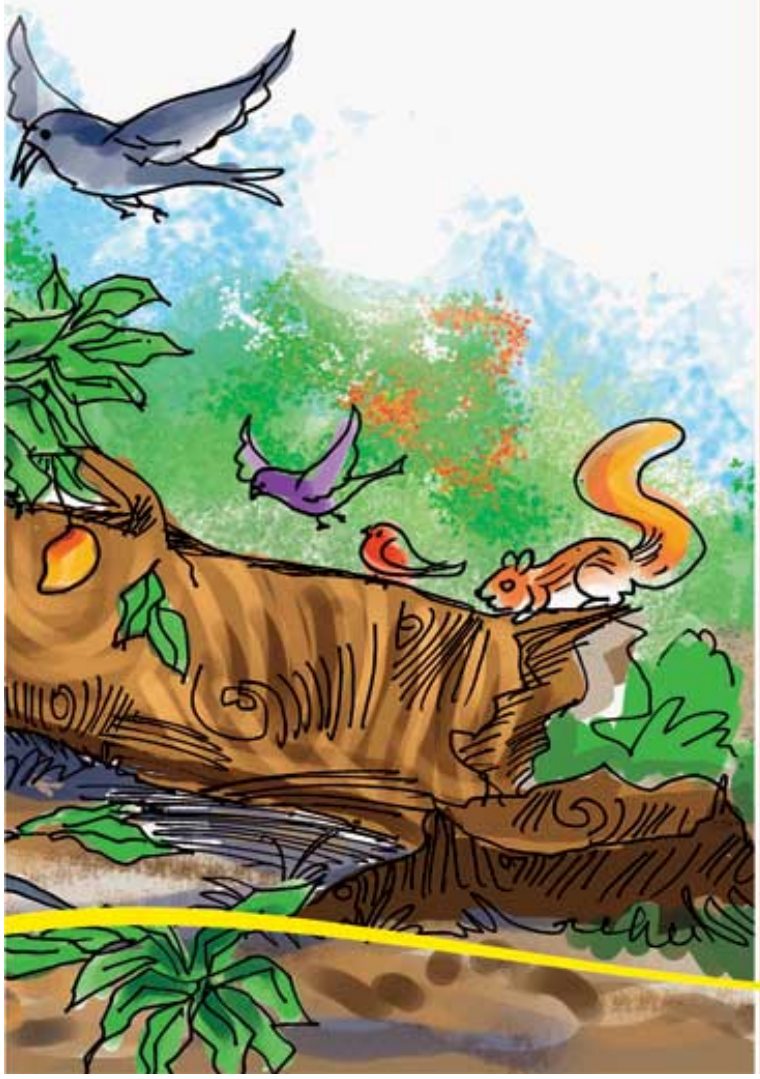

||बाल प्रस्तुति||

जल

कहानी : प्रशांत गुप्ता

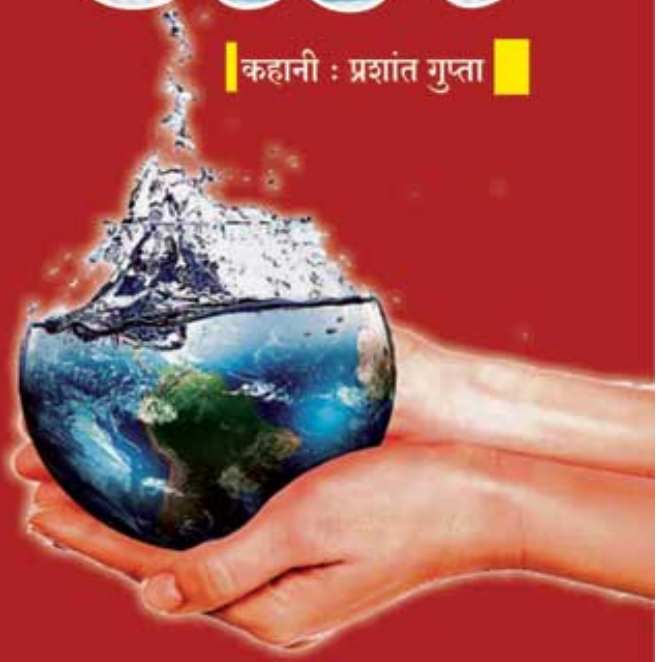

जल ही हमारा जीवन है,
समझिये इसकी कीमत।
जल यदि हो जाए समाप्त,
तो हो जाएगी मुसीबत।।
जानो जल का महत्व साथियो,
करो इसका संरक्षण।
क्योंकि इससे ही सम्भव है,
पर्यावरण का रक्षण।।
मित्रो! जल के बिना कोई भी,
जीवित ना रह पाएगा।
जिसने किया जल का संवर्धन,
वह ज्ञानी कहलाएगा।।
जल है हम जीवों का अमृत,
व्यर्थ न इसे बहाओ।
जल संरक्षण करने में अब,
यारो! हाथ बटाओ।।

● विदिशा (म.प्र.)

|| गंगा दशहरा : ४ जून||

गंगा

कविता : गोविन्द भारद्वाज

उत्तर हिमालय की गोदी से
कल कल बहती प्यारी गंगा,
दौड़ लगा फिर मैदानों में
सींचे क्यारी-क्यारी गंगा।

युगों-युगों से बहती अविरल
देती खेतों में हरियाली,
धन-दौलत भरती जीवन में
जन-जन को देती खुशहाली।

जहां-जहां से गंगा गुजरे
शुचि हो जाते घाट वहां के,
स्नान करा निज शीतल जल में
बढ़ा देती है ठाट वहां के।

बूंद-बूंद अमृत-सी इसकी
देती सबको जीवन धारा,
मैली न होने पाये कभी
ये पावन हो लक्ष्य हमारा।

सकल जगत में पूजी जाती
भागीरथी हमारी गंगा,
सभी पापों से मुक्ति देती
कितनी है उपकारी गंगा।

● अजमेर (राज.)

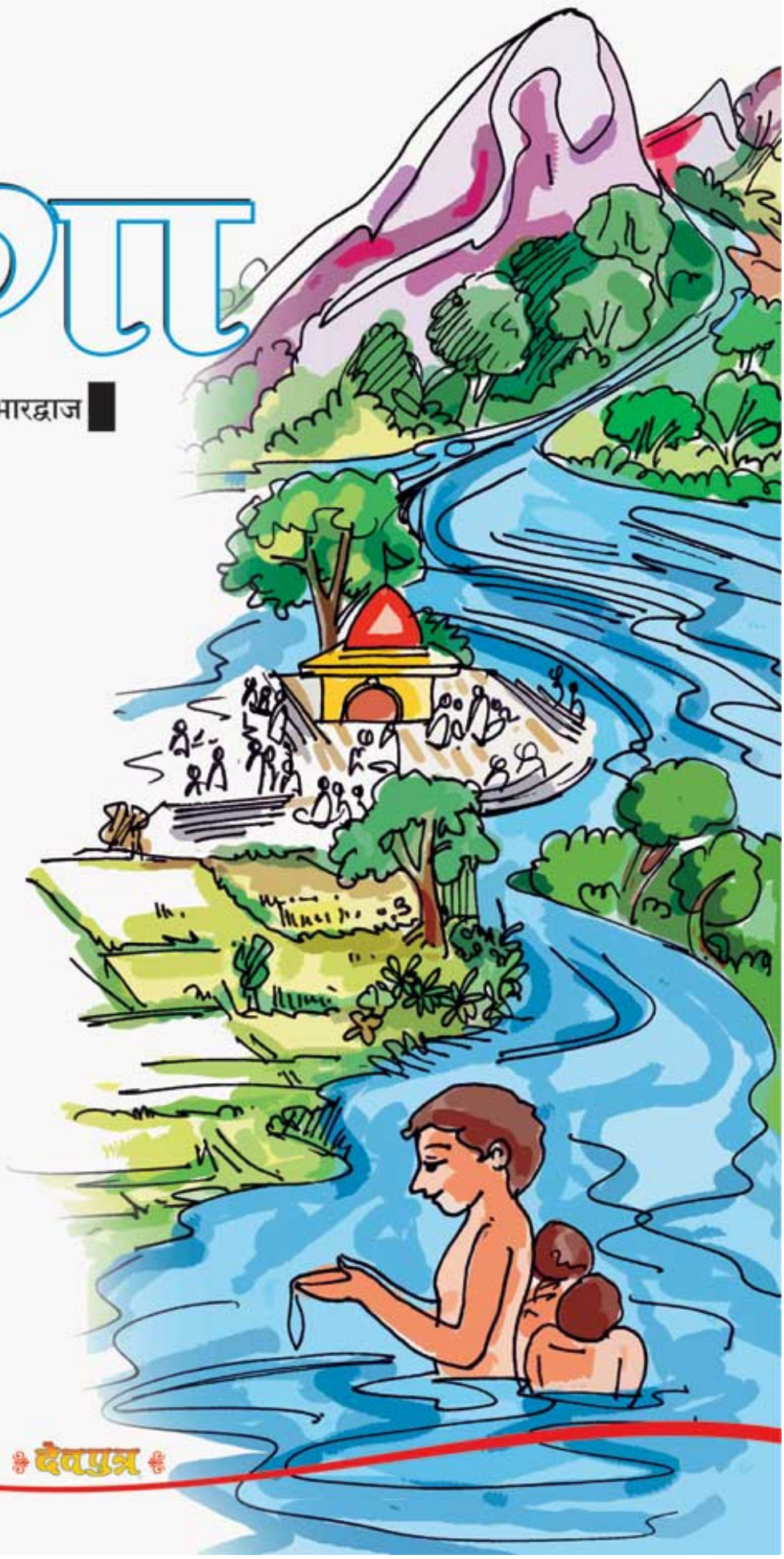

चित्र पहेली

• चाँद मो. घोसी

मिली प्रेरणा

कहानी :डॉ. जितेश कुमार

गर्मी की छुट्टी हो गई थी। इस बार भी संजू को ढेर सारा गृहकार्य मिला था। इसके अलावा कोई परियोजना कार्य जिसे वह प्रोजेक्ट कहता था, भी उसकी गर्मी की छुट्टी के मजा को किरकिरा कर रहा था। समाज विज्ञान की शिक्षिका रुना चौधरी ने सभी को सुंदर-सा, प्यारा-सा, सपनों का घर बनाकर लाने को कहा था। संजू तीन दिनों से परेशान था। घर बनाने के लिए उसने सबसे पहले एक स्केच बनाया। फिर उसी स्केच के अनुसार वह गत्तों पर चिपकाते हुए घर बनाने की कोशिश करता। मगर अफसोस की बात यह थी कि शाम होने तक भी संजू घर तैयार नहीं कर पाता था और अंत में खीझकर उसे छोड़ देता। घर बनाने की यह कोशिश आज दसवें दिन भी जारी रही। संजू घर बनाने में असफल रहा। मारे थकावट के कारण शाम को वह जल्दी सो जाता था।

आज सुबह वह एक चिड़िया की चहचहाहट से जल्दी जाग गया था। बाहर आया तो देखा कि एक चिड़िया बड़ी ही

तन्मयता से घर के सामने के बगीचे में नीम के पेड़ पर घोंसला बनाने में व्यस्त है। यह दृश्य संजू को इतना सुंदर लगा कि वह उसे देखने में खो गया। एक–दो सूखी पत्तियाँ तो कभी दो–एक घास–फूस को अपनी चोंच में दबाकर चिड़िया घर बनाने में लगी पड़ी थी। देखते ही देखते घोंसले ने अपना आकार ले लिया था।

संजू बड़े ही कौतूहल से यह सब देखता रहा। अगले दिन भी चिड़िया घोंसला बनाने में लगी रही। तीसरे दिन तब जाकर घोंसला बनकर तैयार था। चिड़िया चीं–चीं करते हुए खुशियाँ मना रही थी। संजू यह देखकर खूब खुश हो रहा था। अब तो संजू बार–बार खिड़की खोलकर उन्हें देखता रहता था। शाम हो जाने के बाद चिड़िया की आवाज बंद हो जाती थी। वह सोचता शायद चिड़िया थक गई हैं।

संजू दिन रात उसी के बारे में सोचा करता था। वह दिन भर देखा करता। इस कारण वह घर बनाने में अपने काम से पूरी तरह बेखबर था। वैसे भी उसे घर बनाने में कोई रुचि नहीं रह गई थी। रात को संजू जल्दी सो गया था। सोते ही सपनों में खो गया। उसने देखा कि वह चिड़िया उसके पास आई है। वह उससे खूब बातें कर रही है। संजू के साथ–साथ चिड़िया रानी भी खूब खुश हो रही है। आखिर दोनों में मित्रता जो हो चुकी थी। अचानक संजू को कुछ याद आई तो वह दुखी सा हो गया। चिड़िया ने उससे दुःख का कारण पूछा तो उसने उससे सारी बातें कह दी। उसे घर बनाने की बात याद आ गई थी। इस पर चिड़िया ने उससे कहा– ''पहले मेरा भी एक घोंसला था जिसमें मैं अपनी माँ के साथ रहा करता था। पिछले दिनों आए तूफान में मेरा घोंसला गिर गया था और मेरी माँ भी चल बसी थी। लेकिन मैंने हार नहीं मानी। जीवन में कुछ भी पाने के लिए संघर्ष के भरोसे मैं जीना चाहती थी। आज जब इधर से गुजर रही थी तो मुझे यहाँ मेरे रहने लायक सही वातावरण दिखा और मैं यहीं रहने के लिए एक घोंसला बनाया। देखो, मेरा सुंदर सा प्यारा सा घर बनकर तैयार है। यह मेरे सपनों का घर है। अब मैं यहीं से एक नई जिंदगी शुरु करना चाहती हूँ। और तो और अब तो मुझे तुम्हारे जैसा दोस्त भी मिल चुका था।

तभी चिड़िया की चीं–चीं की आवाज से संजू की नींद खुली तो सवेरा हो चुका था। उसे पता नहीं चला कि वह सपना ही देख रहा था। फिर भी वह काफी खुश था। ऐसा लगा जैसे वह सपना नहीं देख रहा था, बल्कि चिड़िया रानी उसे गा–गाकर, गीत सुनाकर कर रहा– उठो, मेरे प्यारे दोस्त अपने काम में जुट जाओ। लगातार अभ्यास से तुम अवश्य ही सफल होंगे। असफता से घबराओ नहीं। संजू को लगा जैसे वह इस बार घर बना ही लेगा। उसे न जाने एक विश्वास आ गया था।

संजू आज बड़े ही मन से अपने काम में लग गया। दोपहर होते–होते उसे अपने सपनों के घर को बनने का आभास हो चुका था। वह खुश था कि उसे कक्षा में डाँट नहीं मिलेगी। सपने में चिड़िया रानी से मिली प्रेरणा की वजह से वह एक घर बनाने में सफल हो गया। वह दौड़ते हुए खिड़की के पास गया। तभी चिड़िया को भी उसने अपनी खिड़की पर ही बैठा हुआ देखा। उसने उसे ढेर सारा दाना चुगाया।

गर्मी की छुट्टी समाप्त होने पर संजू भी अपने 'सपनों के घर' का प्रतिरूप लेकर विद्यालय गया। कक्षा में उसके सभी साथी इसे देखकर आश्चर्यचकित थे। एक बार तो कक्षा के अध्यापक को भी लगा कि उसने किसी दूसरे से घर को बनवाया है, लेकिन उसने अपनी सारी बातें कक्षा में कह सुनाई । अध्यापक ने कहा– ''वाकई यह सबके लिए एक प्रेरणा की बात है।

संजू के बनाए घर के प्रतिरूप को सभी ने बेहतर बताया। उसे सबसे सुंदर घर घोषित किया गया। घर जाने पर संजू सबसे पहले उस चिड़िया के सामने ही खुशी में झूमने लगा।

● अलीगढ़ (उ.प्र.)

गंगाराम

कविता : भगवतीप्रसाद द्विवेदी

• पटना (म.प्र.)

नहीं व्यक्ति बस गंगाराम
जीवटता का दूजा नाम
फटी बिवाई पांवों में
रहते मस्त अभावों में
कुरता फटा, फटी धोती
मिलती महज नमक-रोटी
फिर भी कभी नहीं रोते
नाहक दुखी नहीं होते
ठेला खींचे चरर-मरर
पहुँचाते सामान शहर
जुतते रोज सुबह से शाम
बहा पसीना करते काम

जगन्नाथ है अपना हाथ
मेहनत ही है पूजा-पाठ
अधरों पर मुस्कान लिए
भोजन के सामान लिए
नित्य समय से घर आते
खुशियां झोली भर लाते
प्यार जताकर, खा-पीकर
गाते लोकगीत जीभर
हो बेफिक्र ठठा हँसते
मन में सबके जा बसते
करें मुश्किलों को आसान
जिन्दादिल हैं गंगाराम

चुस्की वाला आया

कविता : रेखा लोढ़ा 'स्मित'

टन टन टन टन,
बजी घंटियां।
चुस्की वाला आया,
रंग बिरंगे खट्टे मीठे
शरबत आला लाया।
चुन्नु-मुन्नु बंटी बबली
सब बाहर दौड़े आए।
कोई मांगे गुलाब खस खस
काला खट्टा खाए
लेकिन मुन्ने की अम्मा को
रंग नारंगी भाया
चुस्की वाला आया।
गुड़िया बोली मुझको तो
रबड़ी फालूदा दे दो।
पप्पू जिद पर अड़ा हुआ है,
दो-दो गोटे ले दो।
सिम्मी ने मिन्नी को बाहर
जल्दी से बुलवाया,
चुस्की वाला आया।

● भीलवाड़ा (राज.)

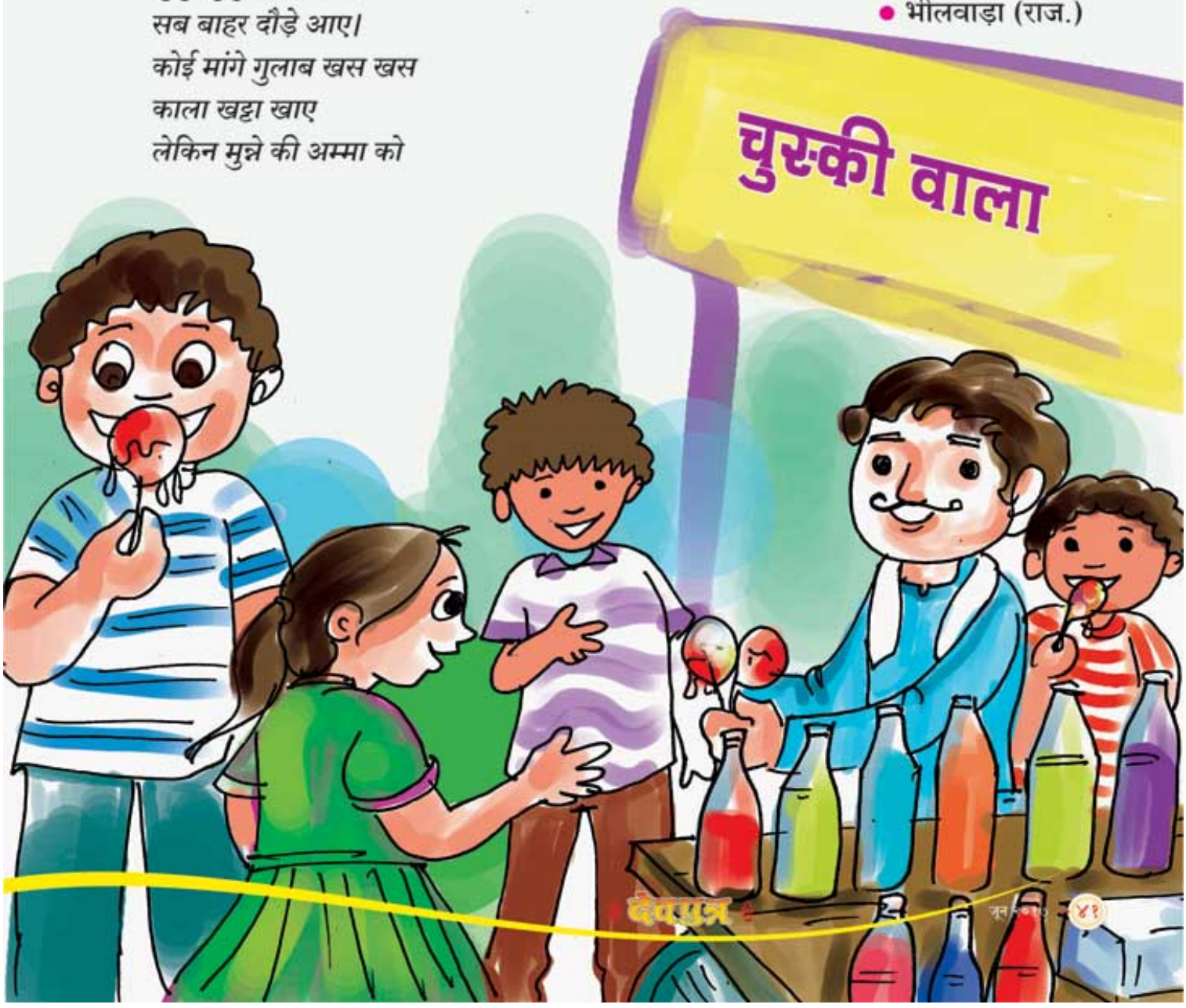

पुस्तक परिचय

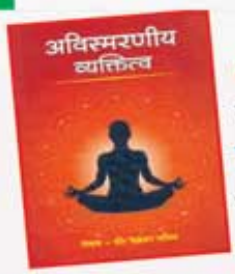

अविस्मरणीय व्यक्तित्व – बाल साहित्य के वरेण्य कलमकार **डॉ. चक्रधर 'नलिन'** द्वारा लिखित १० महापुरुषों की बालोपयोगी संक्षिप्त जीवनियाँ

प्रकाशक – वेदांत पब्लिकेशन्स, बालाजी हाऊस, बीरबल साहनी मार्ग, लखनऊ (उ.प्र.)

मूल्य ५०/-

विज्ञान पंचमी – बाल साहित्य में विज्ञान लेखन के समर्थ हस्ताक्षर **चंद्रप्रकाश शर्मा 'परसारिया'** द्वारा रचित बाल विज्ञान की रोचक एवं बोधपूर्ण ५० कविताएँ ३० हायकू एवं रोचक पहेलियां व वैज्ञानिक परिचय।

प्रकाशक –अक्षर प्रकाशन, दतिया (म.प्र.)

मूल्य ५०/-

बटोही की बाल कविताएँ – प्रसिद्ध बाल कवि **डॉ. अशोक कुमार गुप्त 'अशोक'** की ३३ बाल कविताएं जिनमें बचपन पूरी ताजगी से अभिव्यक्त हुआ है।

प्रकाशक –निखिल पब्लिशर्स एण्ड ड्रिस्टीब्यूटर्स, ३७ शिवराम कृपा, विष्णु कालोनी, शाहगंज, आगरा १०

मूल्य ४०/-

बन्दर मामा का तरबूज – प्रसिद्ध बाल रचनाकार एवं समीक्षक **डॉ. नागेश पाण्डेय संजय** की १२ चुटीली मस्तभरी सचित्र बाल कविताएं।

प्रकाशक –आरती प्रकाशन, काटरोड़, लाल कुंआ, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

मूल्य १५/-

बच्चे पग पग पर मुस्काते – बालमन के कुशल मर्मज्ञ **प्रबोध मिश्र 'हितैषी'** की द्वारा रचित ४२ बाल कविताएँ जिनमें बचपन की निर्मलता कल कल करती है।

प्रकाशक –श्रीमती कीर्ति मिश्रा, एवरेस्ट कोचिंग इंस्टीट्युट, बड़वानी (म.प्र.)

मूल्य १०/-

वरिष्ठ, वरेण्य बाल साहित्य सृष्टा **डॉ. आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप'** रचित अवधी **प्रकाशन** रानेपुर पलिया गोलपुर सुलतानपुर (उ.प्र.) द्वारा प्रकाशित बाल गीतों की ३ महत्वपूर्ण कृतियाँ, प्रत्येक का मूल्य ७०/-

मेरा देश सलोना है

६२ देशभक्ति पूर्ण प्रेरक रचनाएं

देशभक्त बलिदानी

काव्यमय प्रश्नोत्तर में ४२ महापुरुषों का परिचय

नाचो गाओ ताता थैया

सुमधुर प्रकृति व प्रेरणा से ओतप्रोत ६१ बालगीत

गर्मी से राहत

चित्रकथा - देवांशु वत्स

रंग भरो

● राजेश गुजर

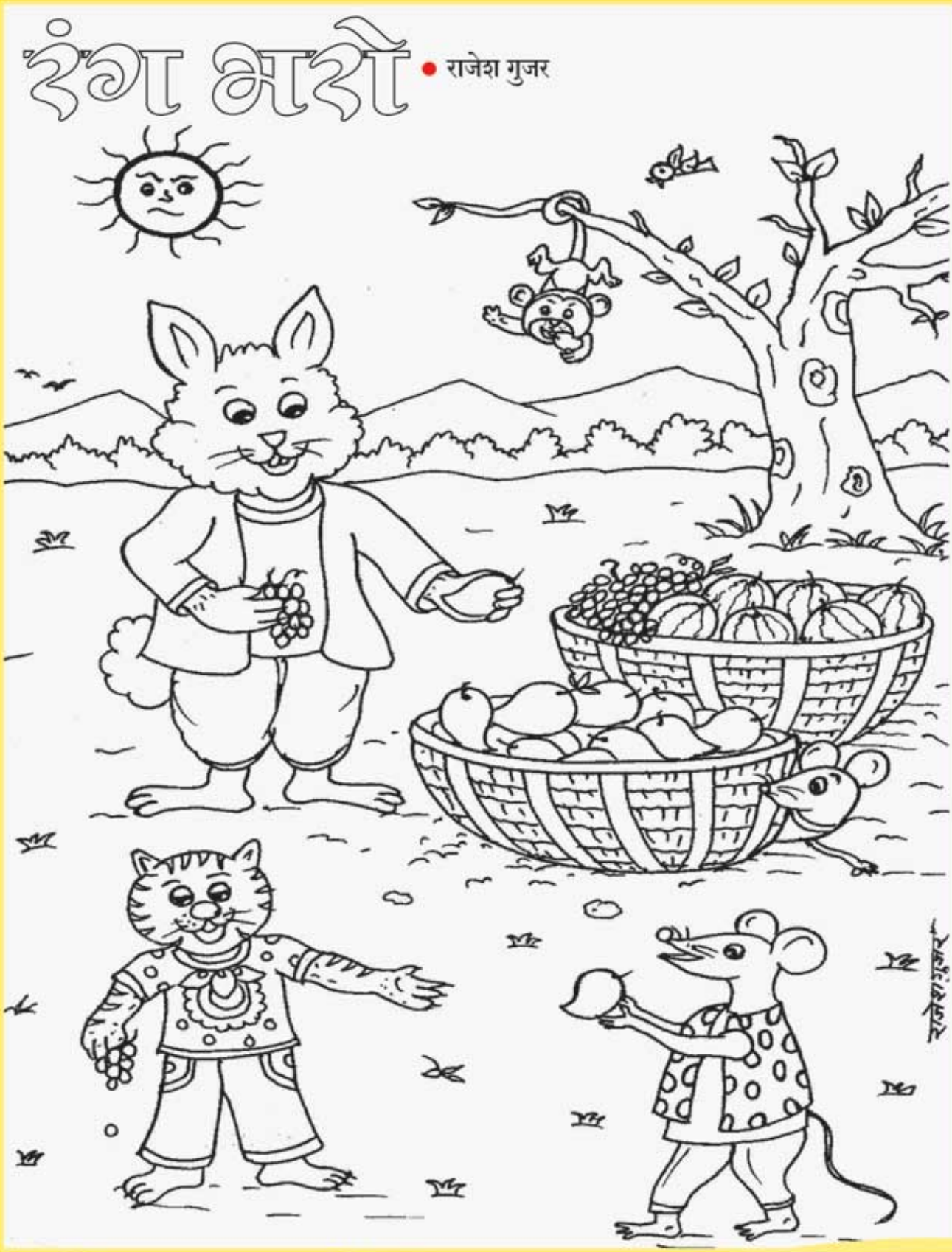

स्वच्छता सर्वेक्ष
मध्यप्रदेश के 22

इंदौर प्रथम एवं

देश के सर्वाधिक स्वच्छ 100 शहरों में मध्यप्रदेश के उज्जैन, ख
रतलाम, सिंगरौली, छिंदवाड़ा, सीहोर, देवास, होशंगाबाद, पी

प्रदेश के नागरि

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

स्वच्छ भारत अभियान–मध्

/CMMadhyaPradesh /CMMadhyaPradesh /Chouhan

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

क्षण-2017 में
2 शहर सम्मानित

भोपाल द्वितीय

वरगोन, जबलपुर, सागर, कटनी, ग्वालियर, ओंकारेश्वर, रीवा,
थमपुर, खण्डवा, मंदसौर, सतना, बैतूल एवं छतरपुर शामिल।

ेकों का आभार

"स्वच्छता सर्वेक्षण में मध्यप्रदेश की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि के लिए नागरिकों, जनप्रतिनिधियों और इस अभियान से जुड़े सभी लोगों को बधाई देता हूँ। इस अवसर पर आइये हम सब मिलकर अपने परिवेश की स्वच्छता के लिए योगदान का संकल्प लें।"

– शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

R.O. No. D-77999

यप्रदेश का सर्वश्रेष्ठ योगदान

ShivrajSingh **Download App - Shivraj Singh Chouhan**

चुटकुले

• विष्णुप्रसाद चौहान

पिंटू (दादाजी से) - ''क्या आप बादाम खाते हैं?''

दादाजी - नहीं, मैं कैसे खा सकता हूं, मेरे तो दांत ही नहीं हैं।

पिंटू - फिर ठीक है, ये बादाम रखिए। मैं शाला से आकर आपसे ले लूंगा।

****

सोनू - अगर चन्द्रमा पर कुत्ता मिल जाए तो क्या कहा जाएगा?

मोनू - चांद में भी डॉग है।

****

बेहोश होते-होते बचा साथियो-

जब एक महिला की स्कूटी के पीछी लिखी लाइन पर मेरी नजर पड़ी, जिस पर लिखा हुआ था 'विधायक के बेटे की टीचर।'

जब कोई सुबह-सुबह आवाज लगाने से भी न उठे तो उसको उठाने का एक नया तरीका लाया गया है।

उसके कान में जाकर धीरे से कह दो तेरे पिताजी मोबाइल चेक कर रहा है। कूद कर भागेगा!!

****

फेस बुक - मैं सबको जानता हूँ।

गुगल- मेरे पास सब कुछ है।

व्हाट्एप्प - मैं सबकी जान हूं।

इंटरनेट - मेरे बिना तुम सब कुछ नहीं।

चार्जर - आवाज नीचे।

****

सोहन के घर उसक विदेशी दोस्त आया और दरवाजे पर नीबू मिर्ची लटका देख चकराया और पूछा- ये क्या हैं?

सोहन - ये एंटी वायरस है। मेड इन इंडिया!!

• ढाबला हरदू (म.प्र.)

माया श्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

डॉ. फकीरचन्द्र शुक्ल

इन्दौर। **देवपुत्र** के माध्यम से प्रसिद्ध बाल साहित्यकार **डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ** द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला **माया श्री राष्ट्रीय बाल साहित्यकार पुरस्कार** इस वर्ष बाल कहानी की प्रकाशित पुस्तक पर दिया गया।

प्राप्त प्रविष्टियों का विद्वान निर्णायक एवं सुप्रसिद्ध कहानीकार श्री सूर्यकांत नागर, श्री योगेन्द्रनाथ शुक्ल एवं श्री सत्यनारायण भटनागर द्वारा परीक्षण कर **डॉ. फकीरचन्द्र शुक्ला (पंजाब)** की पुस्तक **सफलता का मंत्र** पुरस्कार योग्य घोषित की गई।

ज्ञातव्य है कि इस पुरस्कार स्वरूप ५००० की राशि प्रदान की जाती है।

SURYA FOUNDATION

बी– 3/330, पश्चिम विहार, नई दिल्ली – 110063

Tel.: 011-25262994,25253681 Email: suryafnd@gmail.com Website: www.suryafoundation.net.in

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना।

संघ संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम तरुणों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में इंटरव्यू होगा–

1. **CA, Engineers (IIT, NIT & Regional Engineering Colleges), MBA and Mass Communication**

आयु 20–23 वर्ष। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 3 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के पश्चात 1 वर्ष की On Job Training (OJT)/ Practical & Campus Training (PCT) होगी जिसके बाद पोस्टिंग दी जायेगी। वेतन निम्न प्रकार होगा:

Post	Experience	Initial Training + OJT / PCT	After Training CTC
CA	Fresher	40,000 - 50,000	As per performance
	5 years	60,000 - 75,000	- do -
	10 years & above	80,000 - 1,00,000	- do -
Engineer	B.Tech. (IIT)	50,000	- do -
	B.Tech. (NIT)	35,000	- do -
	B.Tech.	20,000 - 25,000	- do -
MBA		15,000 - 20,000	- do -
Mass Communication (Media)		20,000 - 25,000	- do -
MCA, M.Sc., M.Com., M.A.		20,000 - 25,000	- do -
B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store		15,000	- do -
B.Sc. BCA, BBA, BA, B.Com.		8,000	- do -

2. **Graduate Management Trainee (GMT)**

योग्यता – 2017 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। **आयु:** 18 वर्ष से कम। सूर्या साधना स्थली झिंझोली में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद **OJT/PCT** में भेजा जाएगा। **OJT/PCT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA/MCA करने की सुविधा दी जायेगी।** प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा फ्री रहेगी। साथ ही 3,000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ **11वीं में 6,000/-, 12वीं में 7,000/- Graduation 1st yr में 9,000/-, IInd yr में 10,500/-, IIIrd में 12,000/-, MBA/MCA (Ist yr में 15,000/-, MBA/MCA IInd yr में 20,000/- stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/MCA पूरा होने के बाद 30,000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।**

3. **Assistant Staff Cadre (ASC)**

योग्यता – 2017 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा देने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम 55% तथा गणित में 60% अंक प्राप्त किए हों। **आयु:** 18 वर्ष से कम। सूर्या साधना स्थली झिंझोली में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद **OJT/PCT** में भेजा जाएगा। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान 3000/– प्रतिमाह stipend मिलेगा तथा भोजन और आवास की सुविधा फ्री रहेगी। **तीन वर्ष की OJT/PCT** के दौरान **Stipend - 1st yr** : 6000/- प्रतिमाह व आवास, **2nd yr : 7000/-** प्रतिमाह व आवास, **3rd year: 8000/-** प्रतिमाह व आवास। **After training 11000/- (CTC)** प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

(आवेदन अलग कागज पर हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें)

Affix latest Photograph here

पूरा नाम ..... जन्मतिथि (अंको में) .....
पिता का नाम .....
पिता का व्यवसाय ..... मासिक आय .....
भाई कितने हैं (आप को छोड़कर) ..... बहनें कितनी हैं..... जाति ..... वर्ग.....
विवाहित / अविवाहित .....
पढ़ाई का विवरण (Mark Sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें) .....
पत्र व्यवहार का पता ..... पिन कोड ..... टेलीफोन नं. ..... Mobile No. ..... Email .....
NCC / NSS / OTC / ITC / शीत शिविर / PDC (कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें)..... शिविर में दायित्व.....
सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे ..... दायित्व.....
सूर्या परिवार में कोई परिचित है तो नाम एवं विभाग .....
सूर्या फाउण्डेशन के इंटरव्यू में पहले भाग ले चुके हैं तो वर्ष तथा कैडर का नाम .....

अपनी विशेष क्षमता, योग्यता, गुण एवं उपलब्धि अवश्य लिखें। इसके अतिरिक्त अपने विषय में कोई अन्य जानकारी देना चाहें तो अलग पेज पर लिखकर भेजें।

कृपया विस्तारपूर्वक बॉयोडाटा के साथ निम्न पते पर आवेदन करें। Category-1 के आवेदनकर्ता इसके अतिरिक्त अपना detailed CV भी भेजें। आवेदन E-mail द्वारा इस Email-id : suryainterview@gmail.com पर भेज सकते हैं।

सूर्या फाउण्डेशन : बी-3/330, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063

विज्ञापन छपने के एक माह के अंदर आवेदन करें।

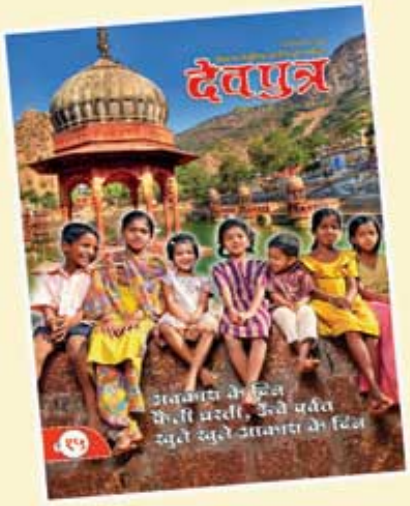

शुल्क वृद्धि सूचना

आत्मीय ग्राहको !

आप सबका देवपुत्र के प्रति स्नेह और दुलार ही कारण है कि देवपुत्र अपने निरंतर प्रकाशन के ३७ वर्ष पूरे कर रहा है। इसके बहुरंगी कलेवर, सामग्री और साज सज्जा को पसंद करने के लिए हम आपके आभारी हैं।

कागज मुद्रण और प्रेषण की लागत में निरंतर वृद्धि से विवश होकर तीन वर्ष बाद एक बार पुनः इसकी सदस्यता दरों में वृद्धि करने का निर्णय हुआ है।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास की बैठक में लिए निर्णयानुसार आगामी सत्र से इसकी सदस्यता दरें इस प्रकार रहेंगी।

एक अंक	२०/– रु.
वार्षिक सदस्यता	१८०/–रू.
त्रैवार्षिक सदस्यता	५००/–रू.
पंचवार्षिक सदस्यता	७५०/–रू.
आजीवन सदस्यता	१४००/–रू.
सामुहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	१३०/–रू. प्रति सदस्य

आलोक :

नगरीय विद्यालयों के लिए यह दरें १ जुलाई २०१७ से व ग्राम भारती के विद्यालयों (जिनकी सदस्यता जनवरी से आरंभ होती है) के लिए १ जनवरी २०१७ से लागू रहेंगी।

संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।

सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।

सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'देवपुत्र' के नाम से बनवाइए।

आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

– संपादक

कार्यशालाएं सम्पन्न

देवास। बाल साहित्य सृजनपीठ इन्दौर के तत्वावधान में दिनांक १७ अप्रैल २०१७ को देवास नगर में रचना शिविर का आयोजन सम्पन्न किया गया। रचना शिविर के मुख्य अतिथि म.प्र. शासन के उच्चशिक्षा मंत्री श्री दीपक जोशी एवं श्री पद्मनारायण दुबे रहे। सृजनपीठ के निदेशक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना ने बताया कि इस रचना शिविर में विषय विशेषज्ञ श्री सदाशिव कौतुक (इन्दौर), श्री मनोज दुबे (कांटाफोड़), श्रीमती कीर्ति श्रीवास्तव (भोपाल), श्री गोपाल माहेश्वरी (इन्दौर) ने १२ विद्यालयों के १३५ बच्चों को बाल कहानी, बाल कविता, बाल पत्रिका संपादन व रिपोर्ताज लेखन का प्रशिक्षण दिया। संयोजक श्री वीरेन्द्र काजवे रहे।

गौतमपुरा। बाल साहित्य सृजनपीठ द्वारा गौतमपुरा में एक कविता लेखन कार्यशाला का आयोजन २० अप्रैल को किया गया। लार्ड रामा स्कूल में श्री पंकज जी प्रजापति के संयोजकत्व वाली इस कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में श्रीमती सुधा चौहान, श्रीमती अंजुल बंसल एवं श्री गोपाल माहेश्वरी का सहयोग प्राप्त हुआ। अध्यक्षता श्री विशाल राठी ने की। ७० बच्चों ने प्रशिक्षण का लाभ लिया।

पचोर। बाल साहित्य सृजनपीठ की ऐसी ही एक अन्य कविता कार्यशाला पचोर में दिनांक २५ अप्रैल को सम्पन्न हुई। इस कार्यशाला में क्षेत्र के ४७ गांवों के ८३ चयनित छात्र–छात्राओं ने लोकभाषा मालवी मे कविता लेखन का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण श्री गोपाल माहेश्वरी ने दिया। संयोजक श्री गोपाल सोनी रहे।

विकास दवे को पितृशोक

देवपुत्र के प्रबंध संपादक डॉ. विकास दवे के पिताजी श्री स्व. पंडित जीवनलाल जी दवे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पुराने कार्यकर्ता थे वे सरस्वती शिशु मंदिर आलोट में आचार्य के रूप में भी सेवारत रहे। अंतरराष्ट्रीय गायत्री परिवार से आप पुराने एवं सक्रिय सदस्य रहे । वर्तमान में आप इन्दौर नगर में पौरोहित्य कर्म में संलग्न थे। उपर्युक्त संगठनों संघ,विद्याभारती एवं गायत्री परिवार की सामाजिक सुधार दृष्टि आपके पौरोहित्य में भी स्पष्ट परिलक्षित होती थी। सत्यनारायण व्रत कथा हो अथवा अन्य पुराणों की कथाएं नये वैज्ञानिक आधार के साथ उसे समसामयिक सामाजिक संदर्भो से जोडकर आप अपने संपर्कित परिवारों में सदैव राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना और समरसता का न केवल उपदेश देते रहे बल्कि उसे स्वयं के जीवन से चरितार्थ करके प्रस्तुत करते रहे।

७७ वर्ष की अवस्था में भी आपकी संयमित एवं सक्रिय जीवन शैली और रूढी रहित संस्कार परायणता अनेक युवाओं में भी प्रेरणा का स्रोत बनी रही । आप राष्ट्रीय एवं सामाजिक विषयों के सुविचारक,वक्ता एवं सुधारक तो थे ही ज्योतिष,कर्मकांड व संगीत विषयों में भी पारंगत थे। आपके सुपुत्र डॉ. विकास दवे भी आपकी ही प्रेरणा से समाज सेवा में संलग्न हैं। वे देवपुत्र के प्रबंध संपादक एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद के संगठन मंत्री का दायित्व निर्वहन करते हुए विविध सामाजिक संस्थाओं से संलग्न रहकर अपने पिताश्री से प्राप्त संस्कारो का निरन्तर पल्लवन कर रहे है।

पू. जीवन लाल जी दवे का आकस्मिक निधन २९ अप्रैल २०१७ को हृदयाघात हो जाना समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। निधनोपरान्त भी नेत्र दान करके वे दो दृष्टि बाधितों को दृष्टि दान कर गए। देवपुत्र परिवार उन्हें सादर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परम पिता से उन्हें अपनी दिव्य ज्योति में समाहित करने की प्रार्थना करता है। ओम शांति.....

संपर्क – डॉ. विकास दवे, ३, व्ही.आई.पी. धनश्री नगर, अन्नपूर्णा मार्ग
इन्दौर – ४५२००९ (म.प्र.) चल दू. ०९४२५९१२३३६

ATTENTION

STUDENTS

Do Not Worry

Now there are 3 ways to do your home work.

Chart On Paper Size 25x35 cms.

Available 260 Titles.

M.R.P. ₹ 4.00 Each

My Home Work Sticker Chart (One Packet Containing Ten Charts)

Available 120 Titles.

M.R.P. ₹ 6.00 Each

Small Cut & Paste Book

Available 86 Titles.

M.R.P. ₹ 12.00 Each

PUBLISHED BY :

INDIAN BOOK DEPOT (MAP HOUSE)®

2937, BAHADURGARH ROAD, NEAR SADAR BAZAR, DELHI - 110006.

TEL.: 011- 23673927, 011- 23523635 • FAX : 011-23552096

B.O.: WH-78, MAYAPURI INDUSTRIAL AREA, PHASE-1, NEW DELHI-110064.

TEL.: 011-28111008, 28115454

E-mail : info@ibdmaphouse.com , Website : www.ibdmaphouse.com

DELHI-6

पुस्तक विक्रेता मूल्य सूची के लिए कृपया सम्पर्क करें।

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

www.mitva.in

mitva
Naya Daur - Nayi Raunak

एक रिश्ता
जो रौशन कर दे
आपकी जिंदगी

RAL
(निप्पो के को-प्रोमोटर)
प्रस्तुत करते हैं

मितवा
ऑफ-ग्रिड सोलर रेंज

- सोलर पैनल
- सोलर बैटरी
- सोलर डी.सी. फैन
- सोलर चार्ज कंट्रोलर
- सोलर इन्वर्टर
- सोलर स्ट्रीट-लाईट

अब सौर ऊर्जा से रौशन करें अपने घर, दुकान, अस्पताल व स्कूल

हमारी विश्वसनीय पोर्टेबल सोलर रेंज
जो दे आपको रौशनी, कहीं भी कभी भी

वितरक या विक्रेता बनके जुड़ें मितवा के सौर ऊर्जा दौर के साथ, अपनी आय को दें नई ऊँचाई, कॉल करें:
1800 1038 222 (सोमवार से शनिवार, 9:30 AM से 6 PM)

RAL
Global brands, Built on trust.

RAL Consumer Products Ltd. B-7/2, Okhla Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110020
Toll Free No.: 1800 1038 222 | Email : info@ral.co.in | www.ralindia.co.in

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान संपादक – कृष्णकुमार अष्ठाना